नव प्रदेश

www.navpradesh.com

रायपुर, रविवार 10 अक्टूबर 2021, शुक्ल पक्ष-चतुर्थी/पंचमी, विक्रम संवत-2077 वर्ष-10 अंक-238 पृष्ठ-08 मूल्य-3 रुपए

रायपुर, बिलासपुर, भोपाल, जबलपुर व रांची से एक साथ प्रकाशित

आज बेबाक

लखीमपुर खीरी कांड पर सुप्रीम कोर्ट ने तल्ख टिप्पणी की है कि यदि आरोपी किसी मंत्री का बेटा न होकर कोई आम आदमी होता तो क्या उसे भी इतनी छूट दी जाती? सुप्रीम कोर्ट की इस टिप्पणी के बाद अब लोगों का यह मुगालता दूर हो जाना चाहिए कि कानून सब के लिए बराबर है। ऐसे और पहुंच वालो से कानून अलग व्यवहार करता है। जो कानून बनाते है वो तो इसे आसानी से तोड़ भी देते है। सिर्फ आम आदमी पर ही कानून का डंडा चलता है। सही कहा है गोस्वामी तुलसीदास ने कि - समरथ को नहीं दोष गोसाई।

झंडा विवाद के बाद से दो युवक लापता, सवालों में उलझे एसपी

कवर्धा (नवप्रदेश)। पिछले 6 दिनों से हिंसा की आग में सुलग रहा छत्तीसगढ़ का कवर्धा अब अमन चैन व शांति की तरफ लौट रहा। करीब 117 घंटे से बंद बाजार शनिवार को 4 घंटे के लिए खुले तो रौनक लौट आई। वहीं 5 दिनों से बंद इंटरनेट सेवाएं भी शनिवार सुबह से शुरू हो गई हैं। इस घटना को लेकर शनिवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय में कलेक्टर व एसपी ने पत्रकारों से चर्चा की। इस दौरान एसपी पत्रकारों के सवालों में उलझते हुए नजर आए। प्रशासन की तरफ से 5 अक्टूबर के वीडियो पत्रकारो को दिखाया गया। एसपी बार-बार निष्पक्ष कार्यवाही की कर रहे थे।

वीडियो देखने के बाद पत्रकारों ने कहा कि वीडियो 5 अक्टूबर के धरना प्रदर्शन का है, बाकी कहा है तो पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिनके पास वीडियो है, वे हमें उपलब्ध कराए। वीडियो में दिखाया गया कि किस तरह से उपद्रवियों द्वारा वाहनों में तोड़फोड़ की, घरों में पत्थर फेंके गए। वहीं एसपी ने मीडिया को जानकारी दी कि रिजवान को गिरफ्तारी नहीं की गई है। एसपी ने दोनों पक्षों में पहले भी विवाद होने की जानकारी दी। उन्होंने यह भी कहा कि सोशल मीडिया से 7 पोस्ट ब्लॉक कराए गए, यूट्यूब से चार वीडियो अभी तक हटवाए गए है। मामले में अब तक कुल 172 लोगों की पहचान की गई जिनमें 93 लोग गिरफ्तार हुए है। इन 93 में 24 लोग ■ शेष पृष्ठ 6 पर

1000 लोगों के खिलाफ एफआईआर

एसपी मोहित गर्ग ने बताया कि शहर में अशांति फैलाने वाले करीब 1000 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। जिनमें 93 आरोपी नामजद हैं। पूरे मामले में अलग-अलग 7 एफआईआर दर्ज हुई है। पुलिस जांच कर रही है। विभिन्न माध्यमों से मिले वीडियो फुटेज और फोटो से आरोपियों की पहचान की जा रही। एसपी ने कहा कि अगर किसी के पास घटना से जुड़े कोई डिजिटल तथ्य हो तो वे पुलिस को सौंप सकते हैं। वे उसकी भी जांच करेंगे।

हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक बना पंडरिया

पंडरिया नगर सहित पूरा क्षेत्र सदैव हर क्षेत्र में अपना अलग ऐतिहासिक पहचान स्थापित करती आई है। एक बार फिर पंडरिया नगर पंचायत मुख्यालय में मुस्लिम वर्ग द्वारा आगे आकर हिन्दू धर्म के आस्था अनुरूप देवी मां के नवरात्र पर्व के अवसर पर पुराने बस स्टैंड समीप सबसे पुराने दुर्गा पंडाल श्री पुष्पांजलि दुर्गोत्सव स्थल पहुंच कर हिन्दू धर्म का भगवा तोरन और माता का ध्वज खुद बांधा।

अभ्यर्थियों को नहीं होगी दिक्कतें

कलेक्टर रमेश शर्मा ने पत्रकारवार्ता में कहा कि वर्तमान समय में प्री बीएससी बीएड, प्री बीए बीएड एवं बीएससी नर्सिंग की जो परीक्षाएं होने वाली है उसमें कवर्धा शहर में प्रवेश के लिए छात्रों के प्रवेश पत्र ही मान्य होंगे। शहर में बनी तनाव कि स्थिति को देखते हुए लोगों को अगर किसी कारणवश बाहर जाना पड़ता है और देर से पहुंचते है तो उन्हे शहर प्रवेश के लिए दिक्कते हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में वे अपना परिचय पत्र या आईकार्ड साथ में रखे, जिससे उन्हें कोई असुविधा न हो।

सूर्योदय	
उदय :	6:25 सुबह
अस्त :	6:02 शाम

जनसंख्या	
विश्व :	7,898,588,680
भारत :	1,397,539,640

बाजार	
सेंसेक्स :	60212.30
निफ्टी :	17,941.85
गोल्ड :	47,840 प्रति 10 ग्राम
चांदी :	62,590 प्रति किग्रा
अण्डा दर :	4.26 प्रति नग

दिवस

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवसः तनावग्रस्त जीवनशैली में बिगड़ने मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसके प्रति जागरूकता पैदा करने और इससे बचने के उपायों पर विचार करने के उद्देश्य से हर साल 10 अक्टूबर को पूरे विश्व में 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस या मानसिक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन पूरे विश्व के सरकारी और सामाजिक संगठनों द्वारा तनावमुक्ति विषय पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विकास की दौड़ में भागती जीवनशैली से उपजे तनाव के प्रति चिंता व्यक्त कर, उससे बचने और दूर करने के बारे में विचार विमर्श किया जाता है।

आशीष मिश्रा से 8 घंटों में पूछे गए 40 सवाल

लखीमपुर हिंसा : सुप्रीम कोर्ट की फटकार का दिखा असर

नई दिल्ली (ए.)। लखीमपुर खीरी हिंसा केस में केंद्रीय मंत्री अजय मिश्रा के बेटे और नामजद आरोपी आशीष मिश्र से शनिवार को पूछताछ हुई। सुबह 11 बजे से 6 लोगों की टीम पूछताछ कर रही थी जो रात 8 बजे तक जारी था। लखीमपुर में क्राइम ब्रांच के दफ्तर में आशीष मिश्रा से मजिस्ट्रेट के सामने सवाल-जवाब हुए. लखीमपुर में क्राइम ब्रांच के दफ्तर में आशीष मिश्रा से मजिस्ट्रेट के सामने सवाल-जवाब हुआ। आशीष मिश्र अपने वकील के साथ मौजूद रहे. पूछताछ में डीआईजी उपेंद्र अग्रवाल और लखीमपुर के एसडीएम भी

विधायक के साथ स्कूटर से पहुंचा आशीष मिश्रा

केंद्रीय मंत्री का बेटा आशीष मिश्रा 10.38 बजे क्राइम ब्रांच के दफ्तर पहुंच गया। क्राइम ब्रांच की ओर से 11 बजे तक पहुंचने के लिए कहा गया था लेकिन आशीष समय सीमा खत्म होने के 22 मिनट पहले ही पहुंच गया। आशीष लखीमपुर खीरी सदर विधानसभा के विधायक योगेश वर्मा के साथ स्कूटर से क्राइम ब्रांच के दफ्तर पहुंचा. स्कूटर योगेश वर्मा ही ड्राइव कर रहे थे।

अशोक गहलोत बोले- पूरे देश को हिलाकर रख दिया

लखीमपुर खीरी मामले में अब राजस्थान सीएम अशोक गहलोत का भी बयान सामने आया है। उन्होंने ट्विटर पर एक वीडियो शेयर करते हुए कहा कि ये जो कुछ हुआ उसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। मैं उम्मीद करता हूं कि सुप्रीम कोर्ट की भावनाओं को, देशवासियों की भावनाओं को समझकर अविलम्ब ऐसी कार्रवाई होगी जिससे पूरे मुल्क को कि विश्वास हो कि किसानों के साथ न्याय होगा।

पूछताछ में शामिल हैं. आशीष मिश्रा ने अपने पक्ष में कई वीडियो पेश किए. आशीष मिश्रा ने अपने पक्ष में कई वीडियो पेश किए. उन्होंने 10 लोगों के बयान का हलफनामा भी पेश किया, जो बताते हैं कि वो काफिले के साथ नहीं था, दंगल मैदान में था।

12 अक्टूबर से कलश यात्रा : लखीमपुर हिंसा मामले में अब संयुक्त किसान मोर्चा भी आवाज तेज ■ शेष पृष्ठ 6 पर

शाहरुख खान के ड्राइवर से एनसीबी ने की पूछताछ

मुंबई (ए.)। आर्यन खान को सलाखों के पीछे भेजन के बाद एनसीबी क्रूज जहाज ड्रग्स केस में आगे की कार्रवाई में जुट गई है। इस कड़ी में शनिवार को सबसे बड़ा अपडेट ये है कि एनसीबी की टीम शाहरुख खान के ड्राइवर से पूछताछ कर रही है। अभी तक आर्यन खान के परिवार में से किसी से भी पूछताछ नहीं की गई है। वहीं, जमानत याचिका खारिज होने के बाद आर्यन खान इस वक्त आर्थर रोड जेल में बंद है। एनसीबी ने शाहरुख खान के ड्राइवर को समन जारी किया और उसे पूछताछ के लिए बुलाया है। इस वक्त उससे मुंबई स्थित एनसीबी ऑफिस में पूछताछ की जा रही है। इससे पहले एनसीबी ने आर्यन खान के करीबी दोस्त श्रेयस नायर को पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया था। आर्यन खान, अरबाज मर्चेंट और श्रेयस नायर, तीनों स्कूल के समय से दोस्त हैं और ये तीनों मुंबई के धीरूभाई इंटरनेशल स्कूल में एक साथ पढ़ा करते थे।

हंगरी और सर्बिया ने भी दी भारत के वैक्सीन सर्टिफिकेट को मान्यता

■ भारत बायोटेक ने जताई खुशी

नई दिल्ली (ए.)। हंगरी और सर्बिया ने भी भारत के कोविड-19 टीकाकरण प्रमाणपत्र की मान्यता के लिए सहमती दे दी है। विदेश मंत्रालय (MEA) के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने इसकी जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि टीकाकरण प्रमाणपत्रों की मान्यता से लोगों को महामारी के बाद की दुनिया में शिक्षा, व्यवसाय, पर्यटन और अन्य चीजों के लिए दूसरे देशों में जाने में मदद मिलेगी।

बागची ने एक ट्वीट में कहा, एक और देश ने भारत के टीकाकरण प्रमाणपत्र को मान्यता दिया है। सर्बिया के साथ पारंपरिक मित्रता कोविड -19 टीकाकरण प्रमाणपत्रों की पारस्परिक मान्यता में तब्दील हुई है।

एक दूसरे ट्वीट में बागची ने लिखा, कोविड -19 टीकाकरण प्रमाणपत्रों की पारस्परिक मान्यता शुरू होती है! ■ शेष पृष्ठ 6 पर

20 हजार से कम हुए नए कोरोना मामले

नई दिल्ली। बीते कुछ दिनों से देशभर में कोरोना का प्रकोप कुछ कम होता दिखाई दे रहा है। एक्टिव केस के साथ-साथ नए मामलों की संख्या में भी गिरावट देखने को मिल रही है। पिछले 24 घंटों में कोरोना के 19,740 नए मामले सामने आए हैं। वहीं एक्टिव मामले भी मार्च 2020 के बाद से अपने निचले स्तर पर हैं। राहत की बात यह है कि कोरोना से ठीक होने वालों की संख्या नए मामलों से ज्यादा है, यानी जितने लोग कोरोना संक्रमित हो रहे है, उससे ज्यादा लोग कोरोना से ठीक हो रहे हैं।

कोरोना माता का मंदिर गिराया तो पहुंच गई कोर्ट

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश में 'कोरोना माता' का मंदिर गिराए जाने के खिलाफ एक महिला अदालत पहुंच गई। अब सुप्रीम कोर्ट ने इस महिला पर जुर्माना लगाया है। अदालत ने अपनी टिप्पणी में कहा है कि यह न्यायिक प्रक्रिया का दुरुपयोग है। उच्चतम न्यायालय ने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में एक महिला द्वारा अपने पति के साथ मिलकर निर्मित ''कोरोना माता मंदिर'' को ध्वस्त किये जाने के खिलाफ दायर एक जनहित याचिका ''प्रक्रिया का दुरुपयोग'' बताते हुए खारिज कर दी।

आखिरकार कांग्रेस सुप्रीमो ने आजाद और सिब्बल की सुन ली

कांग्रेस ने 16 अक्टूबर को बुलाई सीडब्ल्यूसी की बैठक

- विधानसभा चुनावों और संगठनात्मक चुनावों पर चर्चा
- पार्टी के कई सीनियर नेताओं ने जताई है असहमतियां

नई दिल्ली। कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक आगामी 16 अक्टूबर को बुलाई गई है। इसमें संगठनात्मक चुनावों, आगामी विधानसभा चुनावों और मौजूदा राजनीतिक हालात पर चर्चा की जाएगी। पार्टी के संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल ने शनिवार को ट्वीट कर यह जानकारी दी। कांग्रेस के 'जी 23' समूह के नेताओं की ओर से पार्टी के भीतर संवाद की

सिब्बल और आजाद ने की थी डिमांड

सीडब्ल्यूसी कांग्रेस की निर्णय लेने वाली सर्वोच्च इकाई है। कुछ दिनों पूर्व पार्टी सूत्रों ने कहा था कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी पहले से इसका संकेत दे चुकी है कि सीडब्ल्यूसी की बैठक बहुत जल्द बुलाई जाएगी। पिछले दिनों कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं गुलाम नबी आजाद और कपिल सिब्बल ने सीडब्ल्यूसी की बैठक बुलाने की मांग की थी। आजाद ने सोनिया गांधी को पत्र लिखकर आग्रह किया था कि पार्टी से जुड़े मामलों पर चर्चा के लिए कांग्रेस कार्य समिति की तत्काल बैठक बुलाई जाए।

मांग किए जाने और हाल के महीनों में कई नेताओं के पार्टी छोड़ने की पृष्ठभूमि में यह बैठक बुलाई गई है।

आंतरिक संकट से जूझ रही है कांग्रेस

सिब्बल ने भी पार्टी की पंजाब इकाई में मचे घमासान के बीच पिछले दिनों पार्टी नेतृत्व पर सवाल खड़े किए थे और कहा था कि कांग्रेस कार्य समिति की बैठक बुलाकर इस स्थिति पर चर्चा होनी चाहिए तथा संगठनात्मक चुनाव कराये जाने चाहिए। सीडब्ल्यूसी की बैठक ऐसे समय होने जा रही है जब सुष्मिता देव, जितिन प्रसाद, लुइजिन्हो फलेरियो और कई अन्य नेता पिछले कुछ महीनों में कांग्रेस छोड़कर दूसरे दलों में शामिल हुए हैं।

वेणुगोपाल ने कहा, ''कांग्रेस कार्य समिति की बैठक 16 अक्टूबर को सुबह 10 बजे अखिल ■ शेष पृष्ठ 6 पर

कोयले की कमी : दिल्ली में गहरा सकता है बिजली संकट

केजरीवाल ने पीएम मोदी को पत्र लिखकर जताई चिंता

नई दिल्ली (ए.)। कोयले की कमी का संकट गहराने के बीच दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर राजधानी दिल्ली को बिजली की आपूर्ति करने वाले बिजली संयंत्रों के लिए पर्याप्त कोयला और गैस देने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय से हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है।

कोयला संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए केजरीवाल ने शनिवार को ट्वीट कर कहा, ''दिल्ली को बिजली संकट का सामना करना पड़ सकता है। मैं व्यक्तिगत रूप से स्थिति पर पैनी नजर रख रहा हूं। हम इससे बचने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। इस बीच, मैंने माननीय प्रधानमंत्री को एक पत्र लिखकर उनके व्यक्तिगत हस्तक्षेप की मांग की है।''

जानकारी के अनुसार, दिल्ली में बिजली वितरण करने वाली टाटा पावर ने अपने ग्राहकों को फोन पर मैसेज भेजकर इसकी

जानकारी दी है और उनसे शनिवार दोपहर बाद से बिजली का विवेकपूर्ण उपयोग करने का आग्रह किया है।

टाटा पावर की शाखा टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रिब्यूशन लिमिटेड (डीडीएल), जो मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी दिल्ली में काम करती है, उसने अपने ग्राहकों को एसएमएस भेजा है।

पिछले हफ्ते की शुरुआत में, ऊर्जा मंत्री आर.के. सिंह ने देश में थर्मल पावर प्लांट्स में कोयले की कमी को स्वीकार किया था और इसे असामान्य स्थिति से परे करार दिया था। हालांकि, बाद में उन्होंने यह भी कहा था कि अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बिजली की मांग कम हो जाएगी और संयंत्रों में कोयले की आपूर्ति में भी सुधार होगा। शनिवार को भेजे गए एसएमएस में कहा गया है, ''उत्तर भर में उत्पादन संयंत्रों में कोयले की सीमित उपलब्धता के कारण, दोपहर दो बजे से शाम छह बजे के बीच बिजली आपूर्ति की स्थिति गंभीर स्तर पर है। कृपया विवेकपूर्ण तरीके से बिजली का उपयोग करें। एक जिम्मेदार नागरिक बनें। असुविधा के लिए खेद है - टाटा पावर-डीडीएल।''

भारत को तालिबान से खतरा!

■ सेना प्रमुख बोले- जम्मू-कश्मीर में घुसपैठ की कोशिश कर सकते हैं अफगानिस्तान के आतंकी

नई दिल्ली। सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे ने शनिवार को इस संभावना को खारिज नहीं किया कि अफगानिस्तान मूल के विदेशी आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में घुसने की कोशिश कर सकते हैं। उन्होंने दो दशक पहले अफगानिस्तान में तालिबान शासन के दौरान के इस तरह के उदाहरण भी दिए। सेना प्रमुख ने यह भी कहा कि भारतीय सेना इस तरह की किसी हिमाकत का जवाब देने के लिए तैयार है।

कॉनक्लेव में सेना प्रमुख से पूछा गया कि जम्मू-कश्मीर में हाल में की गई हत्याओं और अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बीच कोई संबंध है? जनरल नरवणे ने कहा कि यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें कोई कनेक्शन है या नहीं। सेना प्रमुख ने कहा, ''निश्चित तौर पर गतिविधियां (जम्मू-कश्मीर) बढ़ी हैं, लेकिन क्या अफगानिस्तान में जो हो रहा है उससे इसका कोई सीधा संबंध है या नहीं, हम नहीं कह सकते।''

सेना प्रमुख ने कहा, ''लेकिन हम जो कह सकते हैं और इतिहास से जान सकते हैं वह यह कि तालिबान के पूर्व के शासन के समय जम्मू-कश्मीर में अफगान मूल के विदेशी आतंकवादी थे। इसलिए यह विश्वास करने की वजहें हैं कि अफगानिस्तान में स्थिति सामान्य होने के बाद उसी तरह की चीजें हो सकती हैं। तब हम अफगानिस्तान से इन लड़ाकों की आवक देख सकते हैं।''

शाह से मिलकर बोले हरियाणा सीएम जल्द खुल जाएंगी दिल्ली की सीमाएं

■ किसान मोर्चा ने बुलाई महापंचायत

नई दिल्ली। पिछले साल नवंबर से दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलनकारी किसान बैठे हैं। बॉर्डर कब खुलेंगे, इसे लेकर कुछ साफ नहीं है। हालांकि हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को उम्मीद है कि जल्द ही सीमाएं खुल जाएंगे। उन्होंने शनिवार को दिल्ली में गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के बाद यह बात कही। खट्टर ने कहा कि सिंघु और टीकरी बॉर्डर खोलने को लेकर उन्होंने शाह को ब्रीफ किया है।

खट्टर ने कहा, 'हमारे यहां रास्ता खोलने का विषय सुप्रीम कोर्ट में गया हुआ है उस पर, ऐलनाबाद के चुनाव और किसान आंदोलन पर बात हुई। हमने अपील की ■ शेष पृष्ठ 6 पर

किसान संगठनों का आंदोलन तेज

दूसरी तरफ किसान संगठनों के रुख में और सख्ती आ गई है। लखीमपुर कांड को लेकर उनका आक्रोश चरम पर है। इस महीने कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। शुरुआत 12 अक्टूबर को लखीमपुर में मारे गए किसानों की अंतिम अरदास से की जाएगी। लखीमपुर से यूपी के हर शहर और राज्य के लिए अस्थि कलश यात्रा होगी। किसानों की अस्थियां हर राज्य में ले जाई जाएंगी फिर उनका विसर्जन होगा। 15 अक्टूबर ■ शेष पृष्ठ 6 पर

चलती ट्रेन में महिला के साथ गैंगरेप, पति के साथ कर रही थी सफर

मुंबई। महाराष्ट्र में लखनऊ से मुंबई जाने वाले पुष्पक एक्सप्रेस में 20 साल की महिला के साथ गैंगरेप की वारदात सामने आई है. यह घटना शुक्रवार रात करीब 8 बजे की है. दरअसल, 8 बदमाशों ने इगतपुरी-कसारा स्टेशनों के बीच यात्रियों को लूटा. बदमाश ट्रेन में इगतपुरी से स्लीपर बोगी डी-2 में चढ़े थे. घाट इलाका होने की वजह से रात में यहां यात्रियों को किसी तरह मदद नहीं मिल पाई. लूटपाट के दौरान ही बदमाशों ने अपने पति के साथ सफर कर रही 20 साल की महिला के साथ गैंगरेप की वारदात को अंजाम दिया. कसारा पर पहुंचने के बाद यात्रियों ने रेलवे से हेल्प मांगी तो मुंबई जीआरपी ने तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए बदमाशों को पकड़ने की कार्रवाई की. मुंबई जीआरपी की तरफ से दी गई जानकारी के अनुसार, कल्याण रेलवे पुलिस स्टेशन पर इस घटना को लेकर मामला दर्ज कर लिया है.

रेलवे पुलिस ने इस मामले में आईपीसी की धारा 395, 397, 376 (डी), 354, 354(बी) के तहत और भारतीय रेलवे एक्ट 37, 153 के तहत मामला दर्ज किया है.

जीआरपी कमिश्नर कैसर खालिद ने बताया कि करीब 8 बदमाश ■ शेष पृष्ठ 6 पर

■ न्यूज गैलरी

एक सुपरवाइजर का एक दिन एवं दूसरे का तीन दिनों का वेतन काटने के निर्देश

दुर्ग (नव प्रदेश)। स्वास्थ्य अधिकारी का प्रभार ग्रहण करने के बाद नगर निगम आयुक्त हरेश मंडावी के निर्देश पर स्वास्थ्य अधिकारी गिरीश दीवान द्वारा वार्डो की सफाई व्यवस्था को दुरूस्त करने में जुट गए हैं। शनिवार को शंकर नाला का निरीक्षण करने पहुंचे। इस दौरान नाले से लगे वार्ड क्रमांक 09, 10 एवं 05 की सफाई व्यवस्था का भी अवलोकन किया। दुर्गा चौक शंकर नाला पुल के नीचे सफाई कामगारों द्वारा कचरा साफ करने के दौरान कचरा इकट्ठा करने की बजाय नाले में ही बहाया जा रहा था। लापरवाही से सफाई कार्य करवाने के कारण वार्ड सुपरवाइजर विनोद पात्रे को नोटिस जारी करते हुए एक दिन का वेतन काटा गया। वार्ड क्रमांक 09 में भी निरीक्षण के दौरान जगह-जगह कचरों का ढेर एवं नालियों में कचरा जाम पाया गया। वहीं वार्ड सुपरवाइजर मुकेश डोंगरे द्वारा डोर टू डोर कचरा कलेक्शन संबंधित कर्मचारियों से न कराकर अन्य कर्मचारियों से कराया जा रहा था जिससे उन कर्मचारियों द्वारा गीला एवं सुखा कचरा पृथकित कलेक्शन नहीं किया जा रहा था जिससे स्वास्थ्य अधिकारी गिरीश दीवान ने वार्ड सुपरवाइजर को भी नोटिस जारी किया गया एवं तीन दिनों का वेतन काटने के निर्देश दिए। वार्ड भ्रमण के दौरान गिरधारी नगर नाले से लगे किराना स्टोर्स के संचालक द्वारा रोड पर कचरा फेंकने के कारण स्वास्थ्य अधिकारी गिरीश दीवान के निर्देश पर 500 रुपए का जुर्माना लगाया गया।

रामेश्वरी को भारत सरकार का सीनियर फेलोशिप

भिलाई (नव प्रदेश)। भारत सरकार के संस्कृति विभाग की ओर से लोकनृत्य विधा के अंतर्गत ''सीनियर फेलोशिप'' वर्ष 2019-20 हेतु रामेश्वरी का चयन किया है। देश भर के दो सौ कलाकारों में वे छत्तीसगढ़ की एकमात्र चयनित कलाकार हैं। इसके पूर्व भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा प्रायोजित दुर्ग जिले में प्रचलित जनजातीय लोकनृत्यों के संग्रहण, प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन का कार्य उनके मार्गदर्शन में किया जा चुका है। साथ ही 'देवारी' लोकनाट्य में वे प्रमुख भूमिका निभा चुकी हैं। रामेश्वरी, छत्तीसगढ़ की ख्यातिलब्ध सांस्कृतिक संस्था लोकमंजरी की नृत्य गुरु हैं। उनके चयन पर छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक संस्थाओं के कलाकारों ने प्रसन्नता जाहिर की है। वे लोकमंजरी के संस्थापक अध्यक्ष पुन्नू यादव की पत्नी एवं छत्तीसगढ़ के युवा फिल्म निर्देशक तथागत यादव की मां हैं।

आज से नाड़ी परीक्षण शिविर

भिलाई (नव प्रदेश)। तीन दिवसीय नाड़ी परीक्षण शिविर का आयोजन 10 से 12 अक्टूबर को श्री डिवाइन शॉप कोहका-जुनवानी रोड विनोबा नगर में सुबह साढ़े दस से संध्या 6 बजे तक किया जाएगा। शिविर में डॉ. रवि पाराशर नाड़ी परीक्षण कर सामान्य से असाध्य रोगों तक का इलाज आयुर्वेदिक दवाईयों के माध्यम से करेंगे। नाड़ी परीक्षण के लिए खाली पेट अथवा भोजन करने के तीन घंटे बाद आ सकते हैं। इस अंतराल में जल का सेवन किया जा सकता है।

तरल अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण का आयोजन

दुर्ग (नव प्रदेश)। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) अंतर्गत तरल अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण का आयोजन जिला पंचायत सभाकक्ष में किया गया। प्रशिक्षण का आयोजन स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) एवं वाटरएड के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। वाटर एंड से जिला समन्वयक विशाल कतरे एवं सुरेश कापसे द्वारा ग्रे वाटर मैनेजमेंट विषय पर प्रतिभागियों को तकनीकी जानकारी दी गई। सोख्ता गड्ढा निर्माण के विभिन्न मॉडलों के संबंध में पीपीटी के माध्यम से जानकारी दी गई। एस आलोक जिपं सीईओ द्वारा प्रतिभागियों को स्वच्छ सर्वेक्षण ग्रामीण 2021 के संबंध में सिटिजन फिडबैक दर्ज किये जाने के लिए जानकारी दी गई एवं उपस्थित सभी प्रतिभागियों से सिटिजन फीडबैक दर्ज कराया गया। स्थायित्व एवं सुजलाम अभियान अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक सोख्ता गड्ढे का निर्माण कर ग्राम को पूर्णतः ग्रे-वाटर मैनेजमेंट युक्त किये जाने के निर्देश दिये गये। इस हेतु जिले के 55 ग्रामों में 529 सोख्ता गड्ढा निर्माण किये जाने हेतु प्रशासकीय स्वीकृति देकर राशि जारी की जा चुकी है एवं ऐसे हैण्डपम्प जिनके समीप सोख्ता गड्ढों का निर्माण किया जाना है, उनके प्रस्ताव मंगवाए जा रहे।

मिनीमाता सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित

दुर्ग (नव प्रदेश)। अनुसूचित जाति/जनजाति/पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक महिलाओं के उत्थान की दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने वाली राज्य की महिला/अशासकीय संस्था को प्रतिवर्ष मिनी माता सम्मान दिया जाता है। इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला/संस्थाओं से महिला एवं बाल विकास विभाग के पांच बिल्डिंग स्थित जिला कार्यालय में 10 अक्टूबर तक आवेदन आमंत्रित किया गया है। अन्य जानकारी के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग से संपर्क कर सकते हैं।

बीएसपी के अधिकारियों व कर्मचारियों ने नेशनल सेफ्टी कांउसिल के ई-लर्निंग कोर्स को सफलता पूर्वक किया पूर्ण

भिलाई। भिलाई इस्पात संयंत्र ने सुरक्षा संवर्धन हेतु निरन्तर नये प्रयासों को अंजाम देता आ रहा है। संयंत्र का सेफ्टी इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट ने संयंत्र संचालन को सुरक्षित बनाने हेतु विविध अभिनव प्रयासों को क्रियान्वित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसी क्रम में संयंत्र का सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग द्वारा नेषनल सेफ्टी कांउसिल ऑफइंडिया के द्वारा संचालित सुरक्षा के ई-लर्निंग कोर्स में अपने कार्मिकों व अधिकारियों को प्रषिक्षित व षिक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इनके ई-लर्निंग कोर्स में शामिल हैं- इलेक्ट्रिकल सेफ्टी, कंसट्रक्षन सेफ्टी, केमिकल सेफ्टी, इंडस्ट्रियल सेफ्टी, एडवांस इंडस्ट्रियल सेफ्टी जिसमें संयंत्र के विभिन्न अधिकारियों व कर्मचारियों ने कोर्स को सफ्लतापूर्वक पूर्ण कर संयंत्र के सुरक्षा को सुदृढ़ करने में अपना योगदान दे रहे है।

निधन-भुनेश्वर सिंह

भिलाई (नव प्रदेश)। अभनपुर निवासी भुनेश्वर सिंह का निधन 8 अक्टूबर को दोपहर 2 बजे निधन हो गया। अंतिम संस्कार उसी दिन शाम 5 बजे रामनगर मुक्तिधाम में किया गया। वे अपने पीछे पत्नी उमा, पुत्र नवीन, पुत्री यूनेश्वरी, भाई शिव कुमार, देवानंद, मिडिया कर्मी लाला सिंह, मिश्री कुमार, नगेन्द्र, भूपेन्द्र के बड़े पापा थे।

शिविर में पहुंचे निगम आयुक्त मरीजों से चर्चा कर लिया फीडबैक

दूसरे दिन ही निगमायुक्त ने लिया एक्शन, तालाब सफाई प्रारंभ

त्योहारी सीजन के चलते तालाबों की सफाई प्रारंभ, निगम आयुक्त प्रकाश सर्वे ने तालाबों का लिया जायजा

भिलाई नगर (नव प्रदेश)। निगम आयुक्त प्रकाश सर्वे रामनगर मुक्तिधाम तालाब पहुंचे, उन्होंने सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। वहीं सफाई कर्मचारियों को तालाब परिसर के विस्तृत सफाई करने के साथ ही तालाब के भीतर के झिल्ली, पन्नी एवं अन्य प्रकार के कचरे को सफाई करने के निर्देश दिए। गणेश उत्सव समाप्त होने के बाद नवरात्रि प्रारंभ हो चुकी है। ऐसे में प्रतिमा विसर्जन एवं जोत विसर्जन इत्यादि की परंपरागत गतिविधियां तेज हो जाती है जिसको देखते हुए ऐसे तालाबों को चयनित कर सफाई की जा रही है। निगम प्रशासन श्रद्धालुओं से अपील करती है कि पूजा से संबंधित सामग्री के विसर्जन के लिए तालाबों में निर्मित कुंड का ही उपयोग करें। ताकि तालाब स्वच्छ बना रहे। कई तालाबों में निस्तारी भी की जाती है इसलिए तालाब सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। निगमायुक्त ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जलकुंभी को भी तालाबों से हटाए, घाट एवं परिसर भी साफसुथरा रहे, त्यौहार को देखते हुए तालाब सफाई को प्राथमिकता से करने के निर्देश उन्होंने दिए हैं। उल्लेखनीय है कि शांति समिति की बैठक में समिति के प्रमुखों ने तालाब सफाई की मांग की थी जिस पर दूसरे दिन ही निगमायुक्त ने एक्शन लेना प्रारंभ कर दिया है और तालाब सफाई प्रारंभ हो चुकी है। स्वास्थ्य शिविर का निरीक्षण निगमायुक्त प्रतिदिन मोबाइल मेडिकल यूनिट के माध्यम से लगाए जा रहे स्वास्थ्य शिविर का निरीक्षण कर रहे हैं। वार्ड 3 कोसा नगर एवं वार्ड 26 हाउसिंग बोर्ड में स्वास्थ्य शिविर का निरीक्षण निगमायुक्त ने किया। उन्होंने दवाइयों के स्टॉक एवं मरीजों द्वारा कराए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जांच की जानकारी ली। निगम कमिश्नर ने हितग्राहियों से बातचीत कर उनका फीडबैक भी लिया।

निगम आयुक्त ने कराई अमृत मिशन के अधिकारियों की परेड

■ सभापति के साथ आयुक्त ने किया बैगापारा क्षेत्र का दौरा

■ चार दिन में जलप्रदाय सामान्य करें : आयुक्त

दुर्ग (नव प्रदेश)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत शिक्षक नगर, बैगापारा क्षेत्र में पानी की किल्लत की लगातार शिकायत पर आयुक्त हरेश मंडावी ने जल प्रदाय एवं अमृत मिशन के अधिकारियों को सुबह 7 बजे शिक्षक नगर पानी टंकी के पास बुलाकर पूरे क्षेत्र का भ्रमण किया। निगमायुक्त हरेश मंडावी ने सभापति राजेश यादव एवं निगम के अधिकारियों को साथ भ्रमण किया। उन्होंने बताया कि बैगापारा के ऊंचे क्षेत्र में पाइप लाइन में प्रेशर नहीं होने से जलापूर्ति ठीक से नहीं हो रही है। इसका समाधान तत्काल किया जाना जरूरी है। इसके लिए सभापति राजेश यादव ने जलप्रदाय को सामान्य करने के लिए पाइप लाइन जोड़ने हेतु सुझाव भी दिए। आयुक्त हरेश मंडावी ने अधिकारियों को चार दिन में जलप्रदाय सामान्य करने हेतु निर्देशित किया। भ्रमण के दौरान एमआईसी प्रभारी मंदीप भाटिया ने आयुक्त को बरसों पुराने व्यायाम शाला का निरीक्षण कराया। आयुक्त ने व्यायाम शाला के जीर्णोद्धार हेतु प्रस्ताव बनाने कार्यपालन अभियंता राजेश पांडे को निर्देशित किया। एमआईसी प्रभारी मनदीप सिंह भाटिया के अनुरोध पर आयुक्त प्रशासनिक अधिकारी, आईएएस सहायक कलेक्टर हेमंत नंदनवार ने क्रिकेट खेल कर स्टेडियम के बच्चों का उत्साहवर्धन किया। भ्रमण के दौरान सहायक अभियंता आरके जैन, स्वास्थ्य अधिकारी गिरीश दीवान, उप अभियंता राजेंद्र ढबाले, भीमराव, मोहित गुप्ता, जल निरीक्षक नारायण ठाकुर एवं अमृत मिशन एजेंसी के अधिकारी उपस्थित रहे।

मेट्रो सिटी की तरह विकसित होगा खुर्सीपार का सौंदर्यीकरण

नव प्रदेश संवाददाता

भिलाई। भिलाई नगर विधायक लगातार शहर के विकास के लिए काम कर रहे हैं। जिनके प्रयास से जल्द ही खुर्सीपार मेट्रो सिटी की तरह डेवलप होने वाला है। इसके लिए केनाल रोड को पूरी तरह से डेवलप किया जाएगा। केनाल पर अब सिर्फ रोड ही नहीं रहेगी। बल्कि केनाल रोड का पूरी तरह से डेवलप करके इसका सौंदर्यीकरण किया जाएगा। केनाल रोड को मेन रोड से जोड़ा जाएगा। बड़े-बड़े पेड़ लगाए जाएंगे। गार्डिंग की जाएगी। लोगों के वाकिंग करने से लेकर व्यायाम करने के लिए भी सुविधाएं बनाई जाएगी। जिस तरह से मेट्रो सिटी में होता है। सेम उसी तरह से पूरी तरह नया रूप दिया जाएगा। इसी विषय को लेकर विधायक देवेंद्र यादव, एमआईसी मेंबर नीरज पाल, जोन 4 के आयुक्त अमिताभ शर्मा, इंजीनियर संजय बागड़े सहित निगम के अधिकारियों की टीम मौका मुआयना करने पहुंचा। विधायक ने अधिकारियों को अपना पूरा प्लान बताया और मौके पर जाकर कहां क्या बनाया जाना है। इसकी पूरी जानकारी दी।

अब जब रोड का काम पूरा हो गया है तो विधायक इसे एक नया रूप देकर मेट्रो सिटी की तरह डेवलप करने और सौंदर्यीकरण करने का प्लान बनाएं हैं।

जिसके तहत जल्द ही काम शुरू होने वाला है।

ग्रामीण क्षेत्रों में चलाया जा रहा कुष्ठ जनजागरूकता अभियान

दुर्ग (नव प्रदेश)। कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेंद्र भुरे के निर्देश में जिले में राज्य शासन द्वारा कुष्ठ जन जागरूकता पखवाड़ा का संचालन किया जा रहा है। इस संबंध में प्रत्येक गांव में लोगों को कुष्ठ मुक्ति के लिए कार्य करने के लिए प्रतिज्ञा दिलाई जा रही है। इस संबंध में जानकारी देते हुए जिला कुष्ठ अधिकारी डॉ. अनिल शुक्ला ने बताया कि कुष्ठ रोगियों के चिन्हांकन के लिए स्वास्थ्य दल गांव-गांव और नगरीय क्षेत्रों में जा रहा है। यहां कुष्ठ रोगियों के चिन्हांकन के साथ ही लोगों को भी संकल्प दिलाया जा रहा है कि वह कुष्ठ रोग से मुक्ति दिलाने की दिशा में काम करें और प्रशासन का सहयोग करें जिसके चलते कुष्ठ रोगियों के चिन्हांकन में काफी मदद मिली है। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि यह पखवाड़ा 28 सितंबर से आरंभ हुआ है और 12 अक्टूबर तक चलेगा।

अफसरों व कर्मियों के साथ सेल-बीएसपी के निदेशक ने किया संवाद

नव प्रदेश संवाददाता

भिलाई। वर्चुअल प्लेटफार्म के माध्यम से भिलाई इस्पात संयंत्र के वित्तीय वर्ष 2021-22 में किये गये निष्पादन और वित्तीय प्रदर्शन से संबंधित मुद्दों पर सेल-बीएसपी के निदेशक प्रभारी अनिर्बान दासगुप्ता और कार्यपालक निदेशकों के साथ विभिन्न विभागों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के क्रॉस-सेक्शन के एक बड़े समूह के साथ डिजिटल संवाद आयोजित किया गया। संवाद के प्रारंभ में तीन साल पहले 09 अक्टूबर को संयंत्र में हुए एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में अपनी जान गंवाने वाले सभी लोगों को श्रद्धांजली देने के लिए सभी प्रतिभागियों द्वारा दो मिनट का मौन रखा गया।

अपने उद्घाटन भाषण में, निदेशक प्रभारी अनिर्बान दासगुप्ता ने कहा कि हमें निरंतर सुधार की दिशा में पर्याप्त सुरक्षा की पहल करनी चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी कोई दुर्भाग्यपूर्ण घटना न हो। उन्होंने कहा कि प्रथम छमाही के दौरान, हमारे उत्पादन स्तर को नियंत्रित किया गया था क्योंकि हमारे कई कर्मचारी कोविड की दूसरी लहर से पीड़ित थे। उन्होंने कहा कि दूसरी तिमाही के दौरान उत्पादन स्तर बढ़ने के साथ ही स्टील बाजार में उछाल देखा गया है। इस प्रकार बाजार ने भी हमारा साथ दिया। उन्होंने कहा कि अब हमें वित्तीय वर्ष की दूसरी छमाही में चुनौतियों के लिए तैयार रहने की जरूरत है और अपने सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने और अपनी लाभप्रदता बढ़ाने की दिशा में काम करने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि हमारे कर्मचारियों के आगामी पे-रिवीजन के साथ ही वेतन और भत्ते पर होने वाला वित्तीय खर्च काफी बढ़ जाएगा। इसलिए हमारे लिए प्रदर्शन में सुधार करना, बाजार के अवसरों का अधिकतम लाभ उठाना और उत्पादन की लागत को कम करने के लिए सभी संभव उपाय करना हमारे लाभप्रदता के लिए और भी आवश्यक है।

पौनी पसारी योजना के तहत निर्मित चबूतरे में विभिन्न सामग्रियों का लग रहा बाजार

निगम आयुक्त प्रकाश सर्वे ने लिया जायजा

नव प्रदेश संवाददाता

भिलाईनगर। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र अंतर्गत पौनी पसारी योजना की शुरूआत हो चुकी है जहां पर हितग्राही अपना परंपरागत व्यवसाय कर रहे है। निगम आयुक्त प्रकाश सर्वे ने पसरा लगाने वाले व्यवसायियों से प्रतिदिन के विक्रय एवं प्राप्त आय पर चर्चा की। वार्ड क्रमांक 26 हाउसिंग बोर्ड के एसबीआई रोड के बाजू संकट मोचन हनुमान मंदिर के पास में इस योजना के तहत चबूतरा, नाली निर्माण, प्रसाधन, पेवर ब्लॉक, शेड निर्माण 26 लाख 88 हजार की लागत से किया जा चुका है। पौनी पसारी का कार्य एसएन ब्रदर्स को दिया गया था जिसने कार्य पूर्ण कर लिया है! निगम क्षेत्र में योजना की शुरूआत होने से क्षेत्र के परंपरागत व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों, कारीगरों एवं स्व-सहायता समूह की महिलाओं को कौशल उन्नयन हेतु बेहतर प्लेटफार्म मिल रहा है। बाजार में टीन शेड के नीचे 15 चबूतरा बनाए गए हैं। टायलेट एवं पेयजल सहित सभी सुविधा उपलब्ध है। राज्य प्रवर्तित पौनी पसारी योजना के तहत भिलाई निगम के जोन 02 क्षेत्रांतर्गत वार्ड 26 में पौनी पसारी योजना के लिए बाजार बनाने जुलाई 2020 में कार्य की शुरुआत हुई थी। स्थानीय व्यवसायियों सहित लोगों को इसका लाभ मिल रहा। स्थानीय छत्तीसगढ़ी परंपरागत व्यवसाय को बढ़ावा देने के उददेश्य से बाजार में सिलाई-बुनाई, चटाई, बांस के उत्पाद, दोना पत्तल, मिट्टी के बर्तन, मूर्तियां बनाना, फूलों का व्यवसाय, पूजन सामग्री, सुपा, सजावटी सामान, जैसे अन्य व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों, कारीगरों एवं स्व-सहायता समूह की महिलाओं को कौशल उन्नयन के लिए एक बेहतर अवसर मिल रहा है।

मैराथन में दिखा उत्साह, महिलाएं भी जमकर दौड़ी

नव प्रदेश संवाददाता

दुर्ग। वन्यप्राणी सप्ताह के समापन के मौके पर दुर्ग वन मण्डल ने मैराथन का आयोजन किया था। जिसमें प्रतिभागियों को 5 किमी और 10 किमी दोनों दूरी का विकल्प दिया गया था। मैराथन सेक्टर-9 के हास्पिटल चौक से शुरू होकर सेक्टर-4 से वापस होते हुए, सेक्टर-9 पहुंच कर संपन्न हुई। आयोजन में लगभग 300 प्रतिभागियों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया, जिसमें 90 महिला प्रतिभागियों ने भी हिस्सा लिया। हरी झंडी दिखाकर दौड़ की शुरुआत की गई। दौड़ में सभी प्रतिभागियों ने जोश के साथ दौड़ लगाई। आयोजन में सभी उम्र के प्रतिभागी शामिल थे। सभी प्रतिभागियों को विभाग के द्वारा ई-सर्टिफि केट प्रदाय किया जाएगा। सीसीएफ शालिनी रैना ने पुरूष धावकों के साथ महिलाओं की उपस्थिति पर प्रशंसा जाहिर की। उन्होंने आगे कहा कि प्रकृति में मानव, पर्यावरण और वन्यजीव एक-दूसरे से किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं। मानव शरीर व मस्तिष्क को स्वस्थ रखने, शुद्ध ऊर्जा प्राप्त करने के लिए पर्यावरण को शुद्ध व साफ सुथरा रखना बेहद जरूरी है। पर्यावरण को शुद्ध व साफ-सुथरा रखने के लिए वन व वन्यजीवों की सुरक्षा जरूरी है। मैराथन में कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेंद्र भुरे भी शामिल थे। उन्होंने कहा कि दौड़ का उद्देश्य वन्यप्राणियों की रक्षा करना, हम लोगों का कर्तव्य है साथ ही हमें पर्यावरण की संरक्षण के लिए हमेशा सजग रहने की जरूरत है। मैराथन में काफी उत्साह दिखा।

दीपक नगर पहुंचे कलेक्टर

स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल में व्यवस्था की ली जानकारी

दुर्ग (नव प्रदेश)। दीपक नगर में अंग्रेजी शिक्षा की व्यवस्था के लिए स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल आरंभ किया गया है। कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर नरेंद्र भुरे पहुंचे और बच्चों व शिक्षकों से बातचीत की। जब कलेक्टर पहुंचे तो विज्ञान की कक्षाएं चल रही थीं। कलेक्टर ने बच्चों से पाठ से संबंधित प्रश्न पूछे। उन्होंने बच्चों से पूछा कि इस स्कूल में कैसे लग रहा है। बच्चों ने बताया कि टीचर अच्छे तरीके से हमें पढ़ाती हैं। कलेक्टर ने बच्चों से पाठ पढ़ने के लिए भी कहा। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि स्वामी आत्मानंद इंग्लिश माध्यम स्कूलों को आरंभ करने के पीछे शासन की मंशा है कि हमारे बच्चे जो केवल अंग्रेजी की कमतरी के कारण पीछे रह जाते हैं। उन्हें मौका मिल सके।

पुरस्कार | अन्य साथियों को भी इसी प्रकार कार्य करने के लिये प्रेरित करें- चंदवानी

ओएचपी विभाग के कार्मिक शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित

भिलाई (नव प्रदेश)। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के ओएचपी विभाग में कार्यरत कर्मचारियों को शिरोमणि पुरस्कार योजना के अन्तर्गत उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कर्म शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विभाग प्रमुख, अनुभाग प्रमुखों एवं कार्मिक अधिकारियों की उपस्थिति में कार्मिकों को विभाग प्रमुख तथा मुख्य महाप्रबंधक बीएल चंदवानी द्वारा सामाजिक दूरी को बनाये रखते हुए पुरस्कार प्रदान किया गया। ओएचपी विभाग में सम्पन्न हुए कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक, बीएल चंदवानी, महाप्रबंधक (मेकेनिकल), बीडी बाबू, महाप्रबंधक (विद्युत), अनिमेश तिवारी, महाप्रबंधक (विद्युत), भादेव टुडु व अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। विभाग प्रमुख द्वारा माह जून-2021 के लिए मास्टर टेक्नीशियन राम कुमार हिरवानी एवं माह सितंबर-2021 के लिए एसीटी, संजीव सिन्हा को कर्म शिरोमणि एवं तिमाही अप्रैल से जून 2021 के लिये प्रबंधक, सतीश कुमार को पाली पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विभाग प्रमुख एवं मुख्य महाप्रबंधक बीएल चंदवानी ने तीनों पुरस्कार विजेताओं की सराहना करते हुए कहा कि आप सभी ओएचपी विभाग के चमकते हुए सितारे हैं एवं अन्य कार्मिकों के लिये भी रोल मॉडल साबित होंगे। उन्होंने विजेताओं को कहा कि इस जज्बे को बनाए रख अपने अन्य साथियों को भी इसी प्रकार कार्य करने के लिए प्रेरित करें। महाप्रबंधक (मेकेनिकल), बीडी बाबू महाप्रबंधक (विद्युत), अनिमेश तिवारी, महाप्रबंधक (विद्युत), भादेव टुडु ने भी विजेताओं की बधाई देते हुए तथा उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि इनके अंदर विषम परिस्थितियों में रहकर अच्छा कार्य करने की आदत है। ये चुनौतियों से भयभीत नहीं होते हैं। अच्छा कार्य करने के लिए टीम भावना का होना अत्यंत आवश्यक होता है और ये सभी इस बात में पूर्ण विश्वास रखते हैं जिससे की आने वाले समय में ओएचपी विभाग को बहुत फायदा पहुंचेगा। सिम्मानित कर्मचारियों नें उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित करने पर खुशी जाहिर की।

सिंगल यूज प्लास्टिक हेतु जनजागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

दुर्ग (नव प्रदेश)। आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय छग पर्यावरण संरक्षण मण्डल दुर्ग द्वारा शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, फरीद नगर, भिलाई में 06 अक्टूबर को सिंगल यूज प्लास्टिक के विलोपन हेतु स्कूली छात्र-छात्राओं के मध्य पर्यावरणीय जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। रूद्र नारायण सिन्हा, प्रधान पाठक, फरीद नगर, व को-आर्डिनेटर ईको-क्लब, दुर्ग द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्य बताते हुए, प्लास्टिक मुक्त भारत के निर्माण में बच्चों के माध्यम से समाज तक पहुंचते हुए, संकट से बचाने का प्रयास करना है। हमें सिंगल यूज प्लास्टिक को विलोपन करते हुए उसके स्थान पर कपड़े, जूट के थैले आदि का उपयोग करना चाहिए।

AFFIDAVIT

By this deed I, the undersigned SHEFALI PATNI W/o PRATIK JAIN (new name) previsously called SHEFAALI PATNI (old name), doing HOUSE WIFE (give profession or vocation) and resident of 13/16, RISHABH NAGAR, DURG DISTT. DURG (C.G.) (address) solemnly declare :-

1) That for and on behalf and my wife and children and remitter issue wholly renounce/relinquish and abandon the use of my former name/surname of SHEFAALI PATNI and in place there of I do hereby assume from this date the name/surname SHEFALI PATNI and so that I and my wife, children and remitter issue may hereafter be called, known and distinguished not by my former name/surname, bust assumed name / surname of SHEFALI PATNI. (2) That for the purpose of evidencing such my determination declare that I shall at all times hereafter in all records, deeds and writings and in all proceedings, dealings and transactions, private as well as upon all occasions whatsoever use and sign the name of SHEFALI PATNI as my name/surname in place and in substitution of my former name surname. (3) That I expressly authorize and request all persons in general and relatives and friends in particular, at all time hereafter so designate and address me, my wife, my children remitter issue by such assumed name/surname of SHEFALI PATNI accordingly (4) In witness whereof I have hereunto subscribed my former and adopted name/surname SHEFALI PATNI and SHEFAALI PATNI affix my signature and seal if any, this 07.10.2021.

Date : 07.10.2021

Signed sealed and delivered by the above Former name SHEFALI PATNI
Name : SHEFALI PATNI
Address: 13/16, RISHABH NAGAR, DURG DISTT. DURG (C.G.)

न्यूज गैलरी

कार्यपालक निदेशक देबदत्त चांद का रायपुर में प्रथम आगमन

रायपुर/नवप्रदेश। बैंक ऑफ बडौदा के कार्यपालक निदेशक देबदत्त चाँद का रायपुर में प्रथम आगमन दिनांक 10.10.2021 को हो रहा है. दिनांक 11.10.2021 को वे रायपुर में शाखा प्रमुखों की बैठक में उपस्थित रहेंगे। श्री देबदत्त चाँद ने बैंक ऑफ बड़ौदा के कार्यपालक निदेशक के रूप में दिनांक 10.03.2021 को कार्यदायित्व ग्रहण किया। आपने वर्ष 1994 में अधिकारी के रूप में अपना बैंकिंग करियर आरंभ किया. आपको वाणिज्यिक बैंकों और विकासात्मक वित्तीय संस्थानों में 27 से अधिक वर्षों का गहन अनुभव है. बैंकिंग उद्योग में अपनी लंबी यात्रा के दौरान आपने ट्रेजरी एवं निवेश बैंकिंग, बाजार जोखिम प्रबंधन के क्षेत्र में विशेषज्ञता के साथ परिचालन और नीतिपरक बैंकिंग के सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्य किया है. आपने विभिन्न बैंकों में महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए, भारत के विभिन्न राज्यों में अपनी जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन किया है। इस बैठक में बैंक ऑफबड़ौदा के भोपाल अंचल प्रमुख, गिरीश सी डालाकोटी, नेटवर्क डीजीएम, छत्तीसगढ़, रंजीत कुमार मंडल तथा छत्तीसगढ़ के सभी क्षेत्रीय प्रमुख उपस्थित रहेंगे।

छग से महिला वर्ग के 16 सहित 67 निशानेबाज क्वालिफाई

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ प्रदेश राइफल एसोसिएशन के तत्वावधान में आयोजित राज्य स्तरीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में युवाओं ने खूब दमखम दिखाया। इस प्रतियोगिता के लिए 220 प्रविष्टियां आई थीं, जिनमें से 67 प्रतिभागियों ने राष्ट्रीय स्तर पर कल से 30 अक्टूबर तक अहमदाबाद में चलने वाली जीवी मावलंकर प्रतियोगिता के लिए क्वालिफाई कर लिया है। छत्तीसगढ़ सशस्त्र सुरक्षा बल की चौथी बटालियन की माना स्थित फायरिंग रेंज में आज प्रतियोगिता के समापन अवसर पर विजेताओं को जेएसपीएल के प्रेसिडेंट (कॉरपोरेट अफेयर्स) श्री प्रदीप टंडन ने पुरस्कृत कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री प्रदीप टंडन ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि छत्तीसगढ़ के निशानेबाजों को इस साल दूसरी बार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर मिला है जिससे वे राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धि हासिल कर सकें। प्रतिवर्ष इस प्रतियोगिता में भाग लेने वालों की संख्या बढ़ रही है, जो उत्साह का विषय है। विशिष्ट अतिथि जेएसपीएल, रायपुर के बिजनेस यूनिट हेड श्री नीलेश टी. शाह ने भी खिलाड़ियों की सफलता की शुभकामनाएं दीं और कहा कि जेएसपीएल सदैव युवाओं को प्रेरित करता रहा है। छत्तीसगढ़ प्रदेश राइफल एसोसिएशन के महासचिव राकेश गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि जिन्दल स्टील एंड पावर लिमिटेड (जेएसपीएल) के चेयरमैन नवीन जिन्दल की प्रेरणा से इस प्रतियोगिता का आयोजन वर्ष 2002 से प्रतिवर्ष किया जा रहा है। हमें गर्व है कि आज प्रदेश के अनेक युवा इस मंच के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भागीदारी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि निशानेबाजी एक ऐसा खेल है, जो हमें शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी तंदुरुस्त रखता है और हमारी तंदुरुस्ती में ही हमारी सफलता का राज छिपा है।

कांग्रेस महिला सांसद पहुंचे एम्स, भाजपा नेत्री सरोज का जाना हालचाल

रायपुर/नवप्रदेश। राज्यसभा सांसद एवं महिला कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष फूलोदेवी नेताम, राज्यसभा सांसद छाया वर्मा एवं रायपुर जिला पंचायत अध्यक्ष डोमेश्वरी वर्मा ने एम्स में जाकर राज्यसभा सांसद सरोज पांडेय से भेंट कर उनके हालचाल जाना। भाजपा नेत्री सरोज पांडेय दो दिन पहले दुर्ग स्थित अपने निवास में गिरकर चोटिल हुई थी जिसके कारण सरोज पांडेय को उपचार के लिए एम्स रायपुर में भर्ती किया गया है।

मंत्री की अनुशंसा पर पहुंच मार्ग के लिए 1 करोड़ से अधिक स्वीकृत

रायपुर/नवप्रदेश। नगरीय प्रशासन एवं विकास तथा श्रम मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया के अनुशंसा पर आरंग विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों के शासकीय भवनों में पक्का पहुंच मार्ग के निर्माण हेतु मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना अंतर्गत लोक निर्माण विभाग द्वारा से एक करोड़ 2 लाख 40 हजार रूपए की स्वीकृति दी गई है। जिसमें प्राथमिक शाला, आंगनबाड़ी केंद्र और मिडिल स्कूल देवदा में सीसी पहुंच मार्ग 300 मीटर के लिए19 लाख 13 हजार, प्राथमिक शाला शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल, आंगनबाड़ी केंद्र एवं पंचायत भवन लखोली में सीसी पहुचं मार्ग का निर्माण 240 मीटर हेतु 16 लाख 80 हजार, प्राथमिक शाला गनोद एवं आंगनबाड़ी केंद्र सोनपैरी में सीसी पहुंच मार्ग का निर्माण कार्य 215 मीटर हेतु 18 लाख 50 हजार स्वीकृत किए गए हैं। इसी तरह ग्राम कोटराभाठा में नवीन ग्राम पंचायत एवं शासकीय उचित मूल्य दुकान तक पहुंच मार्ग निर्माण 250 मीटर हेतु 17 लाख 50 हजार रुपये, ग्राम कुहरा में पंचायत भवन एवं प्राथमिक शाला भवन पहुंच मार्ग निर्माण कार्य 170 मीटर हेतु 17 लाख 81 हजार रुपये, हायर सेकेंडरी स्कूल भवन राखी नवा रायपुर पहुंच मार्ग निर्माण कार्य 113 मीटर हेतु 12 लाख 67 हजार रुपये की स्वीकृति की गयी है।

जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश प्रारंभ

रायपुर/नवप्रदेश। जवाहर नवोदय विद्यालय माना कैंप रायपुर में कक्षा छठवीं और कक्षा 9वीं के लिए प्रवेश परीक्षा की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। कक्षा नौवीं के लिए 31 अक्टूबर और कक्षा छठवीं के लिए 30 नवंबर तक ऑनलाइन आवेदन भरे जा सकते हैं। नवोदय विद्यालय माना कैंप के प्राचार्य ने बताया कि भारत सरकार के शिक्षा के अधीन नवोदय विद्यालय समिति के अंतर्गत कार्यरत एक उत्कृष्ट सहशिक्षा आवासी विद्यालय हैं। यहां लड़के एवं लड़कियों के लिए अलग-अलग छात्रावास की सुविधा है। सभी विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा, भोजन एवं आवास की सुविधा हैं। नवोदय विद्यालय माना कैंप में तृतीय भाषा के रूप में कन्नड़ भाषा का अध्यापन कक्षा छठवीं से नवमीं तक कराया जाता है। यहां संगीत, कला एवं खेलकूद के लिए विद्यार्थियों को विशेष रुप से योग्य शिक्षकों के द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है। अनिवार्य कंप्यूटर शिक्षा एवं स्मार्ट क्लास की भी व्यवस्था है। यह विद्यालय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली से संबंध है जहां प्रतिवर्ष बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम शत प्रतिशत रहे हैं। यहां के छात्र प्रतिवर्ष अधिकाधिक संख्या में NEET, JEE एवं देश के प्रतिष्ठित अन्य विश्वविद्यालयों में चयनित हो रहे हैं।
इस विद्यालय के पूर्व छात्र राज्य एवं भारत सरकार के उच्च पदों पर सेवारत है।

गम्मत ने ऐसा बांधा समां, दर्शक हुए हंसी से लोटपोट

दूसरे दिन भी मनमोहक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड एवं संस्कृति विभाग द्वारा चंदखुरी में आयोजित तीन दिवसीय आयोजन के दूसरे दिन सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम काफी मनोरंजक भरा रहा। कार्यक्रम के दौरान कौशल्या माता एवं प्रभु राम से जुड़े अनेक प्रसंगों को मानस मंडली के कलाकारों द्वारा बड़े ही मनमोहक ढंग से प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम के दौरान राम मानस मंडली रिसामा भिलाई के लेखूराम साहू मंडली द्वारा आयोजित रामलीला के दौरान गम्मत की शानदार प्रस्तुति दी गई जो वहां बैठे श्रद्धालुओं और दर्शकों को हंसी से लोटपोट कर दिया। कार्यक्रम के दौरान गम्मत कलाकारों द्वारा सूत्रधार का अर्थ बताने के लिए जिस प्रकार से हँसिये की धार, भोसला की धार, टंगीया की धार, तेल की धार जैसे हास्य भरे उदाहरण प्रस्तुत किए गए इन्हें सुनकर सभी श्रद्धालु और दर्शकगण हंस-हंस कर लोटपोट हो गए। इसी तरह आचार्य का अर्थ बताने के लिए आम का अचार, नीम्बू का अचार, मिर्ची का अचार जैसे हास्य प्रसंगों भरे संवाद अदायगी से गम्मत कलाकरों के प्रहसन से भरपूर दृश्यों को देखकर वहां उपस्थित मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पर्यटन मंत्री ताम्रध्वज साहू, संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी अपनी हंसी रोक नहीं पाए और पूरा मंच हंसी के ठहाकों से गूंज उठा। मुख्यमंत्री बघेल गम्मत कलाकारों के प्रदर्शन को देखकर उनसे मिलने मंच तक पहुंच गए।

रामलीला मण्डली के कलाकारों के बीच पहुंचकर मुख्यमंत्री बघेल ने किया उनका उत्साहवर्धन

रायपुर/नवप्रदेश। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने चंदखुरी पहुंचकर वहां माता कौशल्या मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों की खुशहाली और सुख-समृद्धि की कामना की। मुख्यमंत्री ने इसके पश्चात मंदिर परिसर में चल रहे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी दर्शक दीर्घा में बैठक आनंद लिया। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर रिसामा की राम लीला मण्डली के कलाकारों के बीच पहुंचकर उनसे आत्मीयता से मिले और कलाकारों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने भगवान राम और माता सीता बने कलाकारों की आरती उतारी। राम लीला मण्डली के कलाकारों ने इस मौके पर मुख्यमंत्री के साथ अपने मोबाइल से सेल्फी ली और फोटो खिचवाएं। इस अवसर पर गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू, संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत और छत्तीसगढ़ राज्य गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष राजे महंत राम सुन्दर दास भी उपस्थित थे।

जस जगराता और भजन से समा बांधा छह सगी बहनों ने

रायपुर/नवप्रदेश। राम वन गमन पर्यटन परिपथ समारोह में शुक्रवार को माता कौशल्या मन्दिर चंदखुरी में सांस्कृतिक कार्यक्रम में राजनांदगांव के एकता मानस सिन्हा परिवार द्वारा जस जगराता और भजन की शानदार प्रस्तुति दी गई। छह सगी बहनों द्वारा छतीसगढ़ी में मोर गांव के शीतला माता और छत्तीसगढ़ के राजकीय गीत अरपा पैरी के धार सहित अन्य गीतों को अपने अंदाज में प्रस्तुत कर दर्शकों की खूब वाहवाही लूटी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की श्रृंखला में एकता मानस सिन्हा परिवार द्वारा श्री राम के लीलाओं का वर्णन किया। आपसी जुगलबंदी से गीत और संगीत से सगी छह बहनों ने कार्यक्रम में उत्साह और जोश भर दिया। छह बहनों में से दुर्गा सिन्हा ने जहाँ अपने मधुर स्वर से सबकों अपनी ओर आकर्षित किया। श्रद्धा सिन्हा ने ढोल, तनुजा सिन्हा ने ऑर्गन, अंजलि सिन्हा ने बेंजो, नूतन सिन्हा ने बाँसुरी और डॉली सिन्हा ने ऑक्टोपैड में अपनी हुनर दिखाते हुए दर्शकों को मंत्र मुग्ध किया। कार्यक्रम में भारी संख्या में पहुंचे लोगों ने छत्तीसगढ़ सरकार के इस आयोजन की खूब सराहना की। ग्रामीण बालमुकुंद, जवाहरलाल, उमेश यादव, संजू देवांगन, पूनम सिन्हा, श्रीमती दुलारी बाई, ऊषा यादव, रेणु साहू,अंजुलता और पवन साहू ने बताया कि चंदखुरी में वे विगत कई साल से माता कौशल्या के मंदिर में दर्शन करने आते रहते हैं।

स्वास्थ्य मंत्री ने 21वीं राज्य स्तरीय शालेय कराटे प्रतिभागियों से की मुलाकात

रायपुर/नवप्रदेश। शनिवार को स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने सिविल लाइन्स स्थित निवास कार्यालय में बिलासपुर में हुई 21वीं राज्य स्तरीय शालेय कराटे प्रतियोगिता के रायपुर के प्रतिभागीयों से भेंट की। इस प्रतियोगिता में रायपुर, दुर्ग, सरगुजा, बस्तर, जशपुर संभाग के लगभग 400 बच्चों ने भाग लिया जिसमे रायपुर के खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 18 गोल्ड 16 सिल्वर और 09 कांस्य पदक के साथ ओवरऑल चैंपियन बनकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इसके उपरांत आज रायपुर पहुंचकर सारे चैंपियन खिलाडियों ने कराटे कोच राजा दुबे के नेतृत्व में स्वास्थ्य मंत्री से मुलाकात की, इस दौरान सिंहदेव ने बच्चों का प्रदर्शन देखा और उनकी सराहना करते हुए आगामी प्रतियोगिताओं में जीत की शुभकामनाए दी और बच्चो के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कवर्धा में तनाव बढ़ाने संतोष व अभिषेक सिंह की भूमिका की जांच हो : कांग्रेस

रायपुर/नवप्रदेश। कांग्रेस ने कवर्धा में दोषियों पर निष्पक्षता के साथ कठोर कार्यवाही के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के निर्देशों का स्वागत किया है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि मुख्यमंत्री के द्वारा घटना के बाद जुलूस का वीडियो सार्वजनिक करने के निर्देश के बाद भाजपा तिलमिला गई है क्योंकि इस वीडियो के सामने आने के बाद भाजपा और उसके नेताओं का दंगाई चेहरा एक बार फिर से सामने आयेगा।

कवर्धा के तनाव के पीछे और तनाव को बढ़ाने के लिये राजनांदगांव के वर्तमान सांसद संतोष पांडेय और पूर्व सांसद अभिषेक सिंह की भूमिका की भी जांच होनी चाहिये। प्रदेश की जनता को यह सच्चाई भी पता लगना चाहिये कि सत्ता हाथ से निकलने के बाद कैसे पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह के पुत्र प्रदेश और विशेषकर अपने गृहनगर की फिजा खराब करने दंगा भड़काने की कोशिश में लगे थे।

शांति और भाई चारा बनाये रखने की अपील क्यों नहीं किया

भाजपा के नेता कवर्धा तनाव पर लगातार बयानबाजी तो कर रहे लेकिन रमन सिंह सहित कोई भी भाजपा नेता कवर्धा में शांति और भाई चारा बनाये रखने का अपील जारी क्यों नहीं किया? भाजपा प्रदेश के सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ कर अपनी राजनैतिक जमीन के लिये खाद-पानी तैयार करने की मंशा में शांति की बहाली में बाधा पैदा कर रही है।

संजीवनी तलाशने के षडयंत्र में लगी भाजपा

कांग्रेस संचार प्रमुख शुक्ला ने कहा कि छग में मुद्दा विहीन भाजपा धर्म की आड़ लेकर अपनी मृत हो चुकी राजनीति के लिये संजीवनी तलाशने के षडयंत्र में लगी है। पहले धर्मांतरण के झूठे मुद्दे को हवा देने की कोशिशें भाजपा द्वारा की गई। जब प्रदेश की जनता ने भाजपा के धर्मांतरण के मुद्दे को नकार दिया तब भाजपा ने कवर्धा युवकों के दो समूहों के छोटे से झगड़े को सांप्रदायिक रंग देने का प्रयास किया। भाजपा के कवर्धा से लेकर प्रदेश स्तर तक के नेता नेता इस घटना को वर्ग संघर्ष के रूप में परिणित करने के प्रयास में लग गये। प्रदेश की अमन पसंद जनता भाजपा के षडयंत्र को भलीभांति समझ रही है। इसलिये प्रदेश में भाजपा की धर्म से धर्म को लड़ाने की योजना सफल नहीं होगी।

स्वास्थ्य मंत्री की अध्यक्षता में हुई स्वास्थ्य विभाग की बैठक

■ राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन और 15वें वित्त आयोग के विषय पर हुई चर्चा

रायपुर/नवप्रदेश। स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने सिविल लाइन्स स्थित निवास कार्यालय में स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। इस बैठक में उन्होंने राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम की प्रगति एवं कार्ययोजना के विषय में जानकारी प्राप्त की, जिसमें टीबी नियंत्रण के लिए चलाए जा रहे अभियान की जिलेवार समीक्षा करते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि टीबी उन्मूलन के लिए ग्राम-ग्राम तक स्वास्थ्य विभाग की टीम को जानकारी पहुंचाने के लिए कार्य करने होंगे।

इसके साथ ही उन्होंने बैठक में मौजूद टीबी मितानों के साथ संवाद करते हुए उनसे कार्यों में आ रही चुनौतियों की जानकारी प्राप्त की एवं उनके सुझावों को जाना, स्वास्थ्य मंत्री ने टीबी मितानों के साथ चर्चा करते हुए उनसे कहा कि क्षेत्रीय स्तर पर आप सभी का योगदान अतुलनीय है, हम सभी को साझा प्रयास करते हुए टीबी मुक्त छत्तीसगढ़ की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने 15वें वित्त आयोग अंतर्गत अनुदान की बैठक में सहभागिता की, इस बैठक में उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में डायग्नोस्टिक अधोसंरचना के विकास के विषयों पर चर्चा की।

पेयजल योजनाओं के कार्यों में तकनीकी रुप से गुणवत्ता विकास और संधारण के लिए कार्यशाला का आयोजन

रायपुर/नवप्रदेश। जल जीवन मिशन के तहत पेयजल योजनाओं के कार्यों में तकनीकी रुप से गुणवत्ता विकास और संधारण के लिए आज नीर भवन में कार्यशाला का आयोजन किया गया । पेयजल योजनाओं के कार्यों में गुणवत्ता संधारण की जिम्मेदारी थर्ड पार्टी इंस्पेक्शन टीम को दी गयी है। आज के कार्यशाला में रायपुर और जगदलपुर जिले के अब्छ सदस्यों ने हिस्सा लिया। इस कार्यशाला में जल जीवन मिशन के मिशन संचालक एस. प्रकाश, अतिरिक्त मिशन संचालक ए. के साहू, प्रमुख अभियंता टी. जी कोसरिया, एक्यूटिव इंजिनियर कैलाश मढ़रिया समेत प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे । मिशन संचालक एस. प्रकाश ने टीम के सदस्यों को जल जीवन मिशन के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कार्यशाला की शुरुआत की साथ ही कहा कि जल जीवन मिशन के जरिए भारत सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर तक जल पहुँचाना चाहती है हम इस लक्ष्य को जल्द से जल्द और उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा करेंगे।

इस कार्यक्रम में रायपुर सीपेट के डायरेक्टर बी. पी पात्रो मुख्य वक्ता के रूप शामिल हुए जिन्होंने टीम के सदस्यों को एच. डी. पी. ई पाइप, कंपोजिट पाइप के गुणवत्ता के बारे में विस्तृत जानकारी दी इनके पश्चात एन. आई. टी रायपुर के सिविल इंजिनियर विभाग के हेड डॉ गंगाधर रामटेक्कर ने वॉटर रिटेनिंग स्ट्रक्चर के तहत कान्क्रीट की गुणवत्ता के मापदंडों को एवं फील्ड में रखी जाने वाली साधनियों के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला के अंत में जे जे एम के अतिरिक्त मिशन संचालक ए. के साहू एवं एक्यूटिव इंजिनियर कैलाश मढ़रिया ने परियोजना के तहत हो रहे विभिन्न कार्यों में गुणवत्ता संधारण की जानकारी देते हुए कहा की यह भारत सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार एवं छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री जी का ड्रीम प्रोजेक्ट है इस परियोजना के तहत हो रहे कार्यों की गुणवत्ता में कहीं भी कोई भी समझौता नहीं किया जायेगा।

बेटी प्रसिद्धि ने प्रदेश व देश को गौरवान्वित किया: डॉ. महंत

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ चरणदास महंत ने सारागांव चांपा की बिटिया प्रसिद्धि को अमेरिका वर्ल्ड चैंपियनशिप रायफल शूटिंग में रजत पदक जीतने पर दी बधाई, शुभकामनाएं।

बता दें, दक्षिण अमेरिका के देश पेरू की राजधानी लीमा में शूटिंग के विश्व चैंपियनशिप में 50 मीटर राइफल शूटिंग में रजत पदक जीत कर देश को गौरवान्वित किया है।

छत्तीसगढ़ के जिला जांजगीर चाम्पा के समाजसेवी परदेशी दास महंत की पोती है। उनके पिता डा. पीयुदेव महंत ने रेडियोलॉजी विशेषज्ञ के तौर पर जांजगीर जिला अस्पताल में एवं माता डा. सीमा महंत ने सारागांव में मेडिकल विशेषज्ञ के तौर पर अपनी सेवाएं दी हैं । वर्तमान में मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर भोपाल में कार्यरत हैं जिस कारण प्रसिद्धि की स्कूली शिक्षा भोपाल के सेंट जोसेफ कान्वेंट स्कूल में हुई एवं कक्षा 9वीं में एन.सी.सी. के माध्यम से शूटिंग में रूचि जागने पर मध्यप्रदेश सरकार के खेल विभाग के टैलेंट हंट द्वारा मध्यप्रदेश शूटिंग एकेडमी में चयनित होकर वहां के प्रशिक्षकों के द्वारा ट्रेनिंग पाकर अपनी प्रतिभा को निखारा एवं भारतीय शूटिंग टीम में निरंतर जगह बनाई। यह उनका तीसरा विश्व चैंपियनशिप था जिसमें उन्होंने अपने टीम के साथी आयुषी पोद्दार एवं निश्चल के साथ अमेरिका की टीम से अंत तक जोरदार मुकाबला किया, जिसमें उन्होंने रजत पदक प्राप्त कर पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन किया। इसके पूर्व प्रसिद्धि राष्ट्रीय स्तर पर कई बार स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक जीत चुकीं हैं। प्रसिद्धि के शुरुआती दौर से ही उनके छोटे दादा डा. चरणदास महंत व दादी श्रीमती ज्योत्सना महंत ने उनको हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। छोटे से शहर चांपा से शुरू होकर विश्व पटल पर नाम कर प्रसिद्धि ने बेटियों को आगे बढ़ने व अपना मुकाम बनाने का संदेश दिया है। प्रसिद्धि की इस सफलता पर पूरा परिवार, प्रदेश व देश गौरवान्वित है और उनके उज्जवल भविष्य की कामना कर रहा है।

कोरोना टीकाकरण का आंकड़ा दो करोड़ पार

रायपुर। छत्तीसगढ़ में कोरोना से बचाव के लिए लगाए गए टीकों की संख्या 8 अक्टूबर को दो करोड़ को पार कर गई है। स्वास्थ्य विभाग से मिली जानकारी के अनुसार प्रदेश में पहली और दूसरी दोनों खुराक को मिलाकर अब तक (8 अक्टूबर तक) दो करोड़ 760 टीके लगाए गए हैं। राज्य में एक करोड़ 41 लाख 77 हजार 728 लोगों को कोरोना से बचाव के लिए पहला टीका और 58 लाख 23 हजार 032 लोगों को दोनों टीके लगाए जा चुके हैं। प्रदेश में 45 वर्ष से अधिक के 84 प्रतिशत और 18 से 44 वर्ष आयु वर्ग के 61 प्रतिशत लोगों को कोरोना से बचाव का पहला टीका लगाया जा चुका है। इन दोनों आयु वर्गों के क्रमशः 30 लाख 72 हजार 405 और 22 लाख 33 हजार 757 नागरिक कोरोना वैक्सीन की दोनों खुराक ले चुके हैं।

भाजपा का चरित्र अपराधियों को संरक्षण देना : धनंजय

रायपुर/नवप्रदेश। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि भाजपा का चरित्र अपराधियों को संरक्षण देना ही हौ लखीमपुर खीरी के घटना के पहले उन्नाव कठुआ, हाथरस में हुई रेप की घटना के समय भाजपा से जुड़े लोग पीड़िता के पक्ष में खड़े होने की बजाय अपराधियों को बचाने के लिए झंडा लेकर सड़कों पर उतरे थे। उन्नाव घटना के आरोपी भाजपा के विधायक कुलदीप सेंगर को बचाने के लिए योगी भाजपा की सरकार ने कानून को संविधान को ताक में रखने का काम किया था। लखीमपुर खीरी की घटना में भी भाजपा सरकार का यही चरित्र उजागर हुआ है। देश में जहां भी भाजपा की सरकारें हैं वहां अपराधियों का बोलबाला है आम जनता डरे सहमे रहती है दुर्भाग्य की बात है उत्तर प्रदेश में हुई अपराधिक घटनाओं पर कार्यवाही के लिए बार-बार न्यायालय को योगी सरकार को फटकार लगानी पड़ती है। सुप्रीम कोर्ट के फटकार के बाद भी भाजपा सरकार उत्तर प्रदेश में लखीमपुर के किसानों के हत्यारे केंद्रीय गृह राज्य मंत्री के पुत्र को गिरफ्तार नहीं कर रही है। सुप्रीम कोर्ट के दबाव के बाद बेशर्म भाजपा ने उनको सरेंडर करायी। योगी शासनकाल में पुलिस को हत्या के अपराधी को दबोच कर गिरफ्तार करने से रोका जाता है कि अपराधी के समर्पण का इंतजार भाजपा की योगी सरकार मोदी और अमित शाह के इशारे पर करती है गृह राज्य मंत्री के किसानों के हत्यारे के पुत्र को बचाने की षड़यंत्र रची जा रही है। सबूतों को नष्ट करने की कोशिश की जा रही है। यह देश का दुर्भाग्य है कि केंद्र में बैठी सरकार देश की 87 प्रतिशत आबादी किसानों के खिलाफ कानून बनाती है। जब किसान कानून का विरोध करते हैं तो उनके खिलाफ दमन चक्र चलाया जाता है।

योगी सरकार और मंत्री की बर्खास्ती की मांग, 11 को कांग्रेस का मौन धरना

रायपुर/नवप्रदेश। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरकार को तत्काल बर्खास्त करने की मांग को लेकर सोमवार 11 अक्टूबर को सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे मध्य देशभर मौन- व्रत करने का निर्णय लिया है। मौन-व्रत का आयोजन सभी जिलों में स्थित केन्द्र सरकार अधिनस्थ कार्यालयों के समक्ष किया जाना है। यूपी के लखीमपुर खिरी में कृषि कानून के विरोध में शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे किसानों को केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री अजय मिश्रा द्वारा दी गयी खुली चेतावनी के परिणामस्वरूप मंत्री एवं उनके परिवार के स्वामित्व वाली जीप के नीचे कुचल दिया गया, जिसका पूरा देश में विरोध व सुप्रीम कोर्ट के दखल के बावजूद उनके खिलाफ कोई निर्णायक कार्यवाही दोषी व मंत्री खिलाफ नहीं किया गया। शर्म की बात है, कि देश के प्रधानमंत्री उक्त प्रकरण पर एक शब्द भी नहीं बोल रहे है।

आईएएस एसोसिएशन के मनोज पिंगुआ बने अध्यक्ष

रायपुर/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ में आईएएस अधिकारियों की एसोसिएशन का पुर्नगठन हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार आईएएस एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज कुमार पिंगुआ को बनाया गया है। सर्व सहमति से हुए पुर्नगठन में उपाध्यक्ष रीता शांडिल्य, सचिव आर प्रसन्ना, संयुक्त सचिव धनंजय देवांगन, तंबोली अय्यज फकीर भाई एवं कोषाध्यक्ष शारदा वर्मा को बनाया गया है।
सांस्कृतिक सचिव हिमशिखर गुप्ता, खेल सचिव केसी देवसेनापति को बनाया गया है। कार्यकारी सदस्य में वरिष्ठ आईएएस निरंजन दास, रीना बाबा साहेब कंगाले, अंबालागन पी, अंकित आनंद, नीरज कुमार बंसोड़ एवं कार्तिकेय गोयल शामिल है।

दशहरे का उत्सव

दशहरे का उत्सव शक्ति और शक्ति का समन्वय बताने वाला उत्सव है। नवरात्रि के नौ दिन जगदम्बा की उपासना करके शक्तिशाली बना हुआ मनुष्य विजय प्राप्ति के लिए तत्पर रहता है। इस दृष्टि से दशहरे अर्थात विजय के लिए प्रस्थान का उत्सव का उत्सव आवश्यक भी है। भारतीय संस्कृति सदा से ही वीरता व शौर्य की समर्थक रही है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के रुधिर में वीरता का प्रादुर्भाव हो कारण से ही दशहरे का उत्सव मनाया जाता है। यदि कभी युद्ध अनिवार्य ही हो तब शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा ना कर उस पर हमला कर उसका पराभव करना ही कुशल राजनीति है। भगवान राम के समय से यह दिन विजय प्रस्थान का प्रतीक निश्चित है। भगवान राम ने रावण से युद्ध हेतु इसी दिन प्रस्थान किया था। मराठा रत्न शिवाजी ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय-प्रस्थान करते थे।

इस पर्व को भगवती के 'विजया' नाम पर भी 'विजयादशमी' कहते हैं। इस दिन भगवान रामचंद्र चौदह वर्ष का वनवास भोगकर तथा रावण का वध कर अयोध्या पहुँचे थे। इसलिए भी इस पर्व को 'विजयादशमी' कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय 'विजय' नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं।

इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ

ऐसा माना गया है कि शत्रु पर विजय पाने के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है। युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस काल में राजाओं (महत्त्वपूर्ण पदों पर पदासीन लोग) को सीमा का उल्लंघन करना चाहिए। दुर्योधन ने पांडवों को जुए में पराजित करके बारह वर्ष के वनवास के साथ तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की शर्त दी थी। तेरहवें वर्ष यदि उनका पता लग जाता तो उन्हें पुनः बारह वर्ष का वनवास भोगना पड़ता। इसी अज्ञातवास में अर्जुन ने अपना धनुष एक शमी वृक्ष पर रखा था तथा स्वयं वृहन्नला वेश में राजा विराट के यहँ नौकरी कर ली थी। जब गोरक्षा के लिए विराट के पुत्र धृष्टद्युम्न ने अर्जुन को अपने साथ लिया, तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। विजयादशमी के दिन भगवान रामचंद्रजी के लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करते समय शमी वृक्ष ने भगवान की विजय का उद्घोष किया था। विजयकाल में शमी पूजन इसीलिए होता है। दशहरा या विजयदशमी या आयुध-पूजा हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। आश्विन शुक्ल दशमी को विजयदशमी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्योहार भारतीय संस्कृति के वीरता का पूजक, शौर्य का उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है।

भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसीलिए इस दशमी को विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से एक है, अन्य दो हैं चैत्र शुक्ल की एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं, शस्त्र-पूजा की जाती है।

प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी जैसे अवगुणों को छोड़ने की प्रेरणा हमें देता है। इस दिन क्षत्रियों के यहां शस्त्र की पूजा होती है। इस दिन रावण, उसके भाई कुम्भकर्ण और पुत्र मेघनाद के पुतले जलाए जाते हैं। कलाकार राम, सीता और लक्ष्मण के रूप धारण करते हैं और आग के तीर से इन पुतलों को मारते हैं जो पटाखों से भरे होते हैं। पुतले में आग लगते ही वह धू-धू कर जलने लगता है और इनमें लगे पटाखे फटने लगते हैं और उससे उसका अंत हो जाता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। शक्ति की उपासना का पर्व शारदेय नवरात्रि प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है।

सत्य पर असत्य की जीत का पर्व दशहरा

दशहरा (विजयादशमी या आयुध-पूजा) हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। अश्विन (क्वार) मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था तथा देवी दुर्गा ने नौ रात्रि एवं दस दिन के युद्ध के उपरान्त महिषासुर पर विजय प्राप्त की थी। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसीलिये इस दशमी को 'विजयादशमी' के नाम से जाना जाता है (दशहरा = दशहोरा = दसवीं तिथि)। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से एक है, अन्य दो हैं चैत्र शुक्ल की एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा।

भारत के विभिन्न प्रदेशों का दशहरा

दशहरा अथवा विजयदशमी राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह आदिशक्ति पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। देश के कोने-कोने में यह विभिन्न रूपों से मनाया जाता है, बल्कि यह उतने ही जोश और उल्लास से दूसरे देशों में भी मनाया जाता जहां प्रवासी भारतीय रहते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भाँति यहाँ भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियाँ और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर तुरही, बिगुल, ढोल, नगाड़े, बाँसुरी आदि-आदि जिसके पास जो वाद्य होता है, उसे लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारंपरिक मिठाई और उपहारों से किया

जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं, व मैदानों में मेले लगते हैं।

बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों,ओडिआ, और आसाम के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। पूरे बंगाल में पांच दिनों के लिए मनाया जाता है। ओडिशा और असम मे 4 दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं। त्योहार के दौरान शहर में छोटे मोटे स्टाल भी मिठाईयों से भरे रहते हैं। यहां षष्ठी के दिन दुर्गा देवी का बोधन, आमंत्रण एवं प्राण प्रतिष्ठा आदि का आयोजन किया जाता है। उसके उपरांत सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी के दिन प्रातः और सायंकाल दुर्गा की पूजा में व्यतीत होते हैं। अष्टमी के दिन महापूजा और बलि भि दि जाति है। दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है।

पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं, जिसे कोलाकुली कहते हैं।[7] स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं, व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं, व सिंदूर से खेलते हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। तदनंतर देवी प्रतिमाओं को बड़े-बड़े ट्रकों में भर कर विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। विसर्जन की यह यात्रा भी बड़ी शोभनीय और दर्शनीय होती है। सहारनपुर उत्तर प्रदेश मे शाकम्भरी देवी शक्तिपीठ पर भक्तों की इस दिन खूब चहल पहल होती है पूरी शिवालिक घाटी शाकम्भरी देवी के जयकारो से गूंज उठती है यहाँ पर नवरात्रि मे भारी मेला लगता है आश्विन का मेला यहाँ बहुत बड़ा होता है और काफी किलोमीटर लंबी लाइन लगती है

तमिल नाडु, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें तीन देवियां लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करते हैं। पहले तीन दिन लक्ष्मी - धन और समृद्धि की देवी का पूजन होता है। अगले तीन दिन सरस्वती- कला और विद्या की देवी की अर्चना की जाती है और अंतिम दिन देवी दुर्गा-शक्ति की देवी की स्तुति की जाती है। पूजन स्थल को अच्छी तरह फूलों और दीपकों से सजाया जाता है। लोग एक दूसरे को मिठाइयां व कपड़े देते हैं। यहां दशहरा बच्चों के लिए शिक्षा या कला संबंधी नया कार्य सीखने के लिए शुभ समय होता है। कर्नाटक में मैसूर का दशहरा भी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रृंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुलहन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभायात्रा का आनंद लेते हैं। इन द्रविड़ प्रदेशों में रावण-दहन का आयोजन नहीं किया जाता है। गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं।

दशहरे का सांस्कृतिक पहलू

इस दिन लोग शस्त्र-पूजा करते हैं और नया कार्य प्रारम्भ करते हैं (जैसे अक्षर लेखन का आरम्भ, नया उद्योग आरम्भ, बीज बोना आदि)। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो कार्य आरम्भ किया जाता है उसमें विजय मिलती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। दशहरा अथवा विजयदशमी भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है, शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है। दशहरे का सांस्कृतिक पहलू भी है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान अपने खेत में सुनहरी फसल उगाकर अनाज रूपी संपत्ति घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग का पारावार नहीं रहता। इस प्रसन्नता के अवसर पर वह भगवान की कृपा को मानता है और उसे प्रकट करने के लिए वह उसका पूजन करता है। समस्त भारतवर्ष में यह पर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इस अवसर पर 'सिलंगण' के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में भी इसको मनाया जाता है। सायंकाल के समय पर सभी ग्रामवासी सुंदर-सुंदर नव वस्त्रों से सुसज्जित होकर गाँव की सीमा पार कर शमी वृक्ष के पत्तों के रूप में 'स्वर्ण' लूटकर अपने ग्राम में वापस आते हैं। फिर उस स्वर्ण का परस्पर आदान-प्रदान किया जाता है।

बस्तर में दशहरा

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर विजय ना मानकर, लोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं, जो दुर्गा का ही रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहां दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। प्रथम दिन जिसे काछिन गादि कहते हैं, देवी से समारोहारंभ की अनुमति ली जाती है। देवी एक कांटों की सेज पर विरजमान होती हैं, जिसे काछिन गादि कहते हैं। यह कन्या एक अनुसूचित जाति की है, जिससे बस्तर के राजपरिवार के व्यक्ति अनुमति लेते हैं। यह समारोह लगभग 15वीं शताब्दी से शुरु हुआ था। इसके बाद जोगी-बिठाई होती है, इसके बाद भीतर रैनी (विजयदशमी) और बाहर रैनी (रथ-यात्रा) और अंत में मुरिया दरबार होता है। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है। दशहरा पर्व को मनाने के लिए जगह-जगह बड़े मेलों का आयोजन किया जाता है। यहां लोग अपने परिवार, दोस्तों के साथ आते हैं और खुले आसमान के नीचे मेले का पूरा आनंद लेते हैं। मेले में तरह-तरह की वस्तुएं, चूड़ियों से लेकर खिलौने और कपड़े बेचे जाते हैं। इसके साथ ही मेले में व्यंजनों की भी भरमार रहती है।

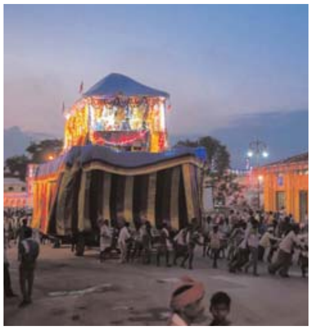

पाठकों की बात
पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

ख़ौफ का मंज़र है

ख़ौफ का मंज़र है तुम कहां हो , रोता मेरा घर है तुम कहां हो । धर्म का चश्मा रखे हैं वे सब , मज़हबी खंजर है तुम कहां हो । छा चुकी हैं बर्बरी घटाएं , चिन्ता में छप्पर है तुम कहां हो । झुकने से मिलती विजय गलत है, फूटने को सर है तुम कहां हो । जुल्मों से,लड़ना सदा उचित पर, सामने, डायर है तुम कहां हो ।

- डॉ संजय दानी

मिल जाए नौरात में

मिल जाए नौरात में, माँते आशिर्वाद। मन आंगन पुलकित रहे,हो ना कभी विवाद। मांग भरे निज प्रीत से, बालम बारम्बार। कर दो ऐसी माँ कृपा,बरसे नेह अपार।। सुखदाई संकल्प हो,घर औ रिश्तेदार। हो तेरा दरबा सजा ,औ मेरा संसार।

- रानी इन्दु

ख़ास पाती | तेरे सर पे सम्पूर्ण ब्रम्हांड है

तेरे सर पे सम्पूर्ण ब्रम्हांड है माँ कोटि-कोटि तुझको प्रणाम तू ही निर्मल बहती गंगातू सरस्वती, तुझसे ही है ज्ञान हर नारी में माँ बसती तू इस जग को होता नहीं क्यों भान क्यों भ्रूण हत्या का पाप सर लेता अपने ये जग महान क्या अन्तर है... क्यों बेटी को. मिलता नहीं स्थान समान तेरी पूजा क्यों करता है क्यों लेता तेरा नाम व्यर्थ है पूजा पाठ सबकुछजो रख ना सके बेटी की आनतू ही माँ हर नारी में क्यों जग नहीं रहा ये मान कैसे मिलेगा खोया हुआ हर नारी का सम्मान।

- शिल्पी अग्रवाल

यात्राओं से लौटते यात्री और जीवन

यात्राओं से लौटते यात्री और जीवन के संध्या काल पर बैठे हुए वृद्ध उस समय यात्री की तरह है जो बीच मार्ग में ही अपने अर्जित अनुभव से अग्रिम यात्रा के भविष्य का रहस्योद्घाटन कर सकते है। ये प्रयास अवश्य ही किया जाना चाहिए की हम उनके मौन और थकान से परिचय पा सके। कभी कभी पल भर का विमर्श किसी बड़े संघर्ष के श्रम से या अनचाही यात्रा से बचा सकता है।

- कुलदीप वर्मा

भूख की अब वेदना गर्भ से

भूख की अब वेदना गर्भ से गुंजायमान रोटी की जद्दोजहद में क्या करें बाजे वाला इंसान! कहां पर करे प्रदर्शन क्या कोई बताएगा ? बाजे की करतल ध्वनि से क्या यह भूख मिटा पाएगा! संगीत ,खुशियां, हर्षोल्लास हैं जिस के मूल आधार तड़प तड़प कर गिरते आँसू घर पर बच्चों की पुकार यह काली घटा का काला दिन लगता है और भी गहराएगा भूख मिटाने अपनी बाजे वाला भगवान के दर पर बाजा बजाएगा।

- प्रवीण माटी

कश्मीर घाटी मे कश्मीरी हिंदुओं और सिखों के खिलाफइस्लामिस्ट

कश्मीर घाटी मे कश्मीरी हिंदुओं और सिखों के खिलाफइस्लामिस्ट कट्टरपंथी विचारधारा और आंतक को छिपाने के लिये और भाईचारे की झूठी भावना दिखाने के लिये गढ़ा गया शब्द है ÷ कश्मीरियत ÷ । यह कश्मीरियत केवल और केवल हिंदुओं और सिखों के अंतिम संस्कार के दौरान ही दिखाई देती है ।

-एल.एस. बिष्ट

पत्थर के परिवार को, सींचा भर भर नेह बदले में पाया सदा, धोबी

पत्थर के परिवार को, सींचा भर भर नेह बदले में पाया सदा, धोबी के कर रेह।। गंगा की अवतार मां, मैं नदिया की धार पानी दोनों एक रंग, मिल पा जाऊं पार।। भ्रम में भूला दिन फिरा, काटी डर डर रात पौ फटते ही बोलता, झूठी सांची बात।। गिरा आचरण कूप में, बचा सिर्फ़ व्यभिचार अपने आगे समझते, संस्कृति को लाचार।

- कल्पना मनोरमा

हवा की तरह हो तुम ख़ामोश पर आसपास अपनी भीनी खुश्बु लिए

हवा की तरह हो तुम ख़ामोश पर आसपास अपनी भीनी खुश्बु लिए सुनो प्रतीक्षा आज भी जिंदा हैं होठों पर मुस्कान लिए..?? तुम लौटो न लौटो तुम्हारी मर्ज़ी नैन प्रतिक्षारत रहेंगे देहरी पर एक आस लिए।

-सुरेखा अग्रवाल

QUIZ TIME

1) बनारस में संस्कृत विद्यालय की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
2) कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर गुजरती है?
3) राकसताल किस नदी का उद्गम स्थल है?
4) भारत के कितने राज्यों में विधान परिषद विद्यमान हैं?
5) टोक्यो ओलम्पिक में किस भारतीय पहलवान ने 57 किग्रा में सिल्वर मेडल प्राप्त किया है?

Ramaquiz

उत्तरमाला- (1) जोनाथन डंकन (2) 8 (3) सतलज (4) 7 (5) रवि दहिया

आज का इतिहास

नई दिल्ली (वार्ता)। 1846- ब्रिटिश खगोलविद विलियम लासेल ने नेपच्यून के प्राकृतिक उपग्रह की खोज की। 1865- जॉन वेल्से हयात ने बिलियर्ड बॉल का पेटेंट हासिल किया। 1893- पहली कार नंबर प्लेट का फ्रांस के पेरिस में चलन शुरू हुआ। 1910- वाराणसी में मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में प्रथम अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ। 1928- च्यांग काई-शेक चीन की राष्ट्रीय सरकार के अध्यक्ष बने। 1954- बॉलीवुड अभिनेत्री रेखा का जन्म। 1956- ऑस्ट्रेलिया के मेलबार्न में ग्रीष्मकालीन ओलंपिक शुरू हुआ। 1963- जेम्स बॉन्ड की दूसरी फिल्म 'रूस से प्यार' को लंदन में प्रदर्शित किया गया। 1964- टोकियो में हुए ग्रीष्मकालीन ओलंपिक का पहली बार टीवी पर सीधा प्रसारण किया गया। 1970- फिज़ी को ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिली । 1978- रोहिणी खादिलकर राष्ट्रीय चेस प्रतियोगिता जीतने वाली प्रथम महिला बनीं। 1978- डैनियल अराप मोई को केन्या का राष्ट्रपति चुना गया। 1986- सैन सल्वाडोर में 7.5 तीव्रता वाले भूकंप में 1,500 लोगों की मौत हुई। 1990- अमेरिका का 67वां मानव अंतरिक्ष मिशन डिस्कवरी 11 अंतरिक्ष से लौटा। 1991- भारत ने विश्व कैरम प्रतियोगिता का खिताब जीता। 1992 - कलकत्ता (अब कोलकाता) को हावड़ा से जोड़ने के लिए हुगली नदी पर बने विद्यासागर सेतु को खोला गया। 2000- श्रीलंका के पूर्व प्रधानमंत्री सिरीमाओ भंडारनायके का निधन। 2005- एंजेला मार्केल जर्मनी की पहली महिला चांसलर बनीं।

सड़क, पानी, स्वास्थ्य व शिक्षा के लिए तरस रहा छत्तीसगढ़ का कश्मीर

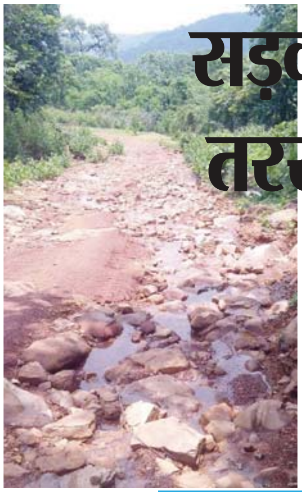

25 सौ मीटर ऊपर पहाड़ी पर बसा ग्रापं ओंढ़-आमामोरा, चुनाव के समय हेलीकाप्टर से पहुंचता है मतदान दल

जीवन एस साहू

गरियाबंद (नवप्रदेश)। उदंती सीतानदी टाइगर रिजर्व के अंतर्गत गरियाबंद विकासखण्ड के अंतिम छोर और जमीनी सतह से लगभग 25 सौ मीटर की ऊंचाई और पहाडों के ऊपर बसे विशेष पिछडी़ जनजाति कमार आदिवासी बाहुल्य ग्राम पंचायत ओंढ एवं आमामोरा आजादी के 75 वर्षो पश्चात भी मूलभूत बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे। ग्राम पंचायत ओंढ़ एवं आमामोरा नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण विधानसभा और लोकसभा चुनाव में मतदान दल हेलीकाप्टर के जरिए यहां पहुंचती है। दोनों पंचायत जिले में प्राकृतिक सौन्दर्य व बड़े-बड़े नदी नालों खूबसुरत वाटरफ ॉल के नाम से प्रदेश में प्रसिध्द है। ठंड के दिनो में इसे छत्तीसगढ़ का कश्मीर कहा जाता है। इस पहाड़ी में ठंड इतना ज्यादा पड़ता है कि सुबह घरों के ऊपर खपरैल और पेड़ पौधों के पत्तों में बर्फ जम जाती है। ग्राम ओंढ़ की जनसंख्या लगभग 650 के आसपास है। इस पंचायत में कमार, भुंजिया जनजाति के लोग निवास करते हैं। ग्राम पंचायत ओंढ के तीन आश्रित ग्राम अमलोर, हथौडाडीह और नगरार इन गांवों तक पहुंचना बड़ी चुनौती है क्योंकि सड़क की स्थिति खराब है। पगड़ंडी रास्तों से होकर यहां तक पहुंचा जाता है। सड़क निर्माण करने की मांग लंबे समय से हो रही है, लेकिन शासन-प्रशासन ने कभी ध्यान ही नहीं दिया। अगर छिन्दौला से आमामोरा तक पक्की सड़क का निर्माण होगा तो बिजली व पानी समेत सभी मूलभूत सुविधाएं इन पंचायतों में पहुंचाया जा सकता है। ग्राम ओंढ़ में वन विभाग द्वारा एक रेस्ट हाऊस बनवाया गया है, साथ ही यहां आदिवासी बालक आश्रम भी है। ग्राम पंचातय ओंढ़ के सरपंच रामसिंह सोरी, उप सरपंच विष्णु यादव, पतिराम यादव, सुनदरलाल, सीताराम, पुनीतराम, निरंजन सोरी ने बताया कि इन ग्रामों में प्राथमिक स्कूल खोला गया है, लेकिन शिक्षक नहीं होने की वजह से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

स्वास्थ्य सुविधा बदहाल

यहां स्वास्थ्य सुविधा की स्थिति बेहद खराब है। घटना-दुर्घटना या गंभीर स्थिति के साथ गर्भवती माताओं को विषम परिस्थितियों मे कांवर और खाट में लिटाकर मिलो पैदल दूरी तय कर अस्पताल तक लाना पड़ता है। स्थाई रूप से उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की मांग ग्रामीण कर रहे।

पहुंचे थे दिग्विजय सिंह

मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ओंढ और आमामोरा में पहुंचे थे। यहां के रहवासियों की जीवन स्तर को बहुत नजदीक से देखा था और इन गांवों में सड़क और बिजली लगाने का वायदा किया था। मध्यप्रदेश के बाद छत्तीसगढ़ को अलग हुए 21 साल हो गए, लेकिन अब तक न तो पक्की सड़क बनी और न ही बिजली लग पाई।

पूर्व सीएम अजीत जोगी भी पहुंचे

वर्ष 2008- 09 में उल्टी दस्त से कई ग्रामीणों की मौत हो गई थी उस दौरान छत्तीसगढ के प्रथम मुख्यमंत्री स्व. अजीत जोगी भी आमामोरा पहुंचे थे उन्होंने ग्रामीणों की समस्याओं को सुना और इसे दूर करने का आश्वासन भी दिया। इसके बाद जिले के तात्कालीन कलेक्टर निरंजन दास, तत्कालीन एसपी अभिषेक पाठक भी पहुंचे। तात्कालीन कलेक्टर निरंजन दास के प्रयास से नेशनल हाईवे मार्ग दबनई से लेकर छिन्दौला तक पक्की सड़क का निर्माण लगभग 06 किमी तक किया गया।

आयरन युक्त पानी पीने को मजबूर

बीहड़ पहाड़ी के ऊपर बसे ग्राम पंचायत ओंढ़ व आमामोरा उनके आश्रित गांवों में शासन के द्वारा हैडपंप लगाया गया है और दो जगहों पर वन विभाग द्वारा सोलर पंप लगाया गया है, लेकिन अधिकांश हैंडपंप से आयरन युक्त लाल पानी निकलने के कारण ग्रामीण नदी-नाले और कुंआ का पानी पीना पंसद करते हैं क्योंकि हैंडपंप का पानी कुछ समय बाद लाल हो जाता है।

जंगली हाथियों का भी आंतक

पिछले तीन चार वर्षो से यह क्षेत्र पूरी तरह हाथी प्रभावित क्षेत्र हो गया है। आए दिन इस क्षेत्र में हाथियों के द्वारा गांव के भीतर उत्पात मचाने से और दुर्गम रास्तों में अचानक निकल जाने से इस क्षेत्र के ग्रामीण परेशान है। क्षेत्र में 02 हाथियों की मौत भी हो चुकी है। वन विभाग द्वारा दूरस्थ वनांचलों में समय समय पर तालाब, स्टॉप डैम, चेकडैम व विभिन्न प्रकार के निर्माण कार्य पिछले 15 वर्षो में लाखों करोडो रूपये खर्च कराया गया है हालांकि इन निर्माण कार्यो का कोई लाभ ग्रामीणों को मिलता नजर नहीं आता।

बांस बर्तन बनाना पारम्परिक व्यवसाय

आमामोरा व ओंढ़ में विशेष पिछड़ी जनजाति कमार, आदिवासी भी निवास करते हैं। इनका मुख्य व्यवसाय बांस बर्तन बनाना और उसे 26 किलोमीटर दूर धवलपुर लाकर साप्ताहिक बाजार मे बेचना है। खेती किसानी भी किया जाता है, लेकिन पहाड़ी इलाका होने के कारण फसल नहीं हो पाती, जिसके कारण अधिकांश किसानों का खेती किसानी से मोह भंग हो रहा है।

बिजली को तरस रहे है ग्रामीण

ग्राम पंचायत आमामोरा के सरपंच मैनाबाई, उप सरपंच नर्मदा नायक ने बताया कि ओंढ व आमामोरा क्षेत्र के आश्रित ग्रामों में शासन द्वारा आज तक बिजली नहीं लगाया गया है लेकिन सौर उर्जा प्लेट लगाया गया है जिसमें आए दिनों बैटरी, सौर प्लेट में खराबी के चलते इसका लाभ नहीं मिल पाता। कुछ घंटे ही चलने के बाद पूरी रात लकड़ी के अलाव जलाकर रात के अंधेरे से संघर्ष करना पड़ता है।

टेराकोटा कलाकारों की कृतियां शिल्प एम्पोरियम में संग्रहित

नवप्रदेश संवाददाता

बालोद। जिले के शिल्पग्राम किले कोड़ा के शिल्पकारों की कृति संग्रहण के बाद अब बालोद के निकटस्थ ग्राम ओरमा के टेराकोटा कलाकारों की कृतियां प्रदेश के सुप्रसिद्ध कला परंपरा शिल्प एंपोरियम संस्थान भिलाई में संग्रहित किया गया। जिससे ग्रामीण स्तर के कलाकारों, शिल्पकारों को उनकी कला का समूचित लाभ प्राप्त होगा। वहीं इन कलाकारों, शिल्पकारों के रोजगार व्यवसाय में भी वृद्धि होगी।

उक्त बातें कला परंपरा संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष डॉ डीपी देशमुख ने ग्राम ओरमा पहुंचकर वहां निवासरत टेराकोटा कार्यशाला के कलाकारों से कहीं तथा उनके द्वारा बनाए गए कुछ आकर्षक कृतियों को शिल्प कला एंपोरियम संस्था भिलाई में प्रदर्शन के लिए ले जाया गया।

ज्ञात हो कि कला परंपरा शिल्प एंपोरियम संस्थान के प्रबंध निदेशक डॉ डीपी देशमुख एवं निदेशक नीता देशमुख द्वारा प्रदेश के विभिन्न जिलों में कार्यरत पारंपरिक शिल्प कलाओं में बस्तर के स्टील आर्ट, बेल मेटल, काष्ठ शिल्प, पत्थर शिल्प, क्राफ्ट आर्ट, जूट शिल्प, गोधन सामग्री, मेक्रम आर्ट, पारंपरिक लोक वाद्य, लोक आभूषण, लोक खेल सामग्री तथा कृषि औजार आदि के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अंचल के कलाकारों की कला को प्रोत्साहित करने निरंतर भ्रमण कर कलाकारों से जीवंत संपर्क किया जा रहा है, ताकि छत्तीसगढ़ राज्य के पारंपरिक विधा के कलाकारों को प्रोत्साहन मिले और उनकी बेशकीमती कला की पहचान हो। गत दिनों कला परंपरा शिल्प एंपोरियम संस्थान भिलाई से एक टीम बालोद के निकतस्थ ग्राम ओरमा आई थी। जिसमें डॉ डीपी देशमुख के साथ संस्थान के निर्देशक नीता देशमुख, पत्रकार सहदेव देशमुख, नरेश गायकवाड, रुचिता साहू, हर्षिता, नीतू यादव, आनंद देशमुख, नोखे लाल साहू, सुनीता गायकवाड, शिरीष कुमार यादव ने भी ग्राम ओरमा के टेराकोटा कार्यशाला में कलाकारों द्वारा बनाए गए कृतियों की प्रशंसा की तथा ओरमा में बनाए गए सामग्री को प्रदर्शन के लिए भिलाई में जाया गया।

कला और कलाकारों को प्रोत्साहन

नवप्रदेश से चर्चा करते हुए कला परंपरा संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष डॉ डीपी देशमुख ने बताया कि प्रदेश के विभिन्न अंचल में एक से बढ़कर एक कलाकार हैं, जो इस अंचल के लोक कला को अपनी कृति में संजोए हुए हैं। परंतु उनकी 'कला' को जैसा चाहिए मार्केट नहीं मिल पा रहा है, जिससे एक श्रेष्ठ कलाकार, हुनरमंद होते हुए भी गरीबी, बेरोजगारी का शिकार होकर रह गया है। कला परंपरा शिल्प एंपोरियम ऐसे कलाकारों को प्रदेश तथा देश में एक नई पहचान देने के लिए कटिबंध है। ताकि पारंपरिक कला और कलाकारों का संरक्षण एवं संवर्धन हो सके।

एनएमडीसी ने जीते दो प्रतिष्ठित पर्यावरण अवार्ड

हैदराबाद। भारत के सबसे बड़े लौह उत्पा्दक एवं इस्पा त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र के एक नवरत्नु उद्यम एनएमडीसी ने पर्यावरण सुस्थिरता वर्ग में गोल्डज अवार्ड प्राप्ता किया। साथ ही, इसकी कुमारस्वा मी लौह अयस्का खान ने पर्यावरण प्रबंधन वर्ग में प्ले टिनम अवार्ड प्राप्तय किया। समारोह का आयोजन सस्टेकनेबल डेवलपमेंट फाउंडेशन (एक काम देश के नाम की एक इकाई) द्वारा आयोजित किया गया तथा देहरादून में 08-10-2021 को सम्पन्न 10वें सम्मेललन में पुरस्काकर प्रदान किए गए। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल, उत्तेराखंड लेफ्टीनेंट जनरल गुरूमीत सिंह थे। एनएमडीसी का अवार्ड के लिए चयन अपनी उत्पादन परियोजनाओं में सुस्थिर विकास के लक्ष्यों एवं सुस्थिर पर्यावरण प्रबंधन पहलों के कार्यान्विथयन में किए गए योगदान के आधार पर किया गया। एनएमडीसी की ओर से पुरस्क्र श्री जयपाल रेड्डी, मुख्यक महाप्रबंधक (संसाधन योजना) तथा श्री संजीव साही, मुख्य महाप्रबंधक, दोणिमलै कॉम्पंलेक्स ने समापन समारोह के मुख्य अतिथि माननीय वन, विद्युत, श्रम, पर्यावरण मंत्री, उत्तराखंड सरकार डॉ हरक सिंह रावत, से प्रासव किए। श्री रेड्डी द्वारा कोविड-19 के दौरान पर्यावरण प्रबंधन÷ विषय पर पेपर प्रस्तुत किया गया जिसकी सभी प्रतिनिधियों तथा आयोजकों ने सराहना की। उन्होंने समारोह के उद्घाटन समारोह के दौरान माननीय राज्ययपाल महोदय का स्वानगत भी किया।

अवैध रूप से बने चर्च को सर्व समाज का भवन बनाने की मांग

बालोद/नवप्रदेश। बालोद शहर के गंजपारा में एक सरकारी जगह पर अवैध कब्जा करके कुछ लोगों के द्वारा चर्च का निर्माण कर दिया गया था जिस पर कुछ माह पहले हिंद सेना के द्वारा आपत्ति किए जाने के बाद राजस्व विभाग ने स्टे ऑर्डर देकर काम रुकवा दिया दिया था। लेकिन इस मामले में हिंद सेना द्वारा उक्त भवन को सर्व समाज के लिए भवन घोषित करने की मांग भी की गई थी। व बजरंग दल भी इस मांग का समर्थन कर रहा है। लगातार बढ़ते इस मांग को देखते हुए राजस्व विभाग द्वारा मामले में सुलह करवाने की कोशिश की गई। मामले की जांच के लिए स्वयं तहसीलदार परमेश्वर मंडावी और उनकी टीम स्थल पर पहुंची। जहां लोगों से पूछताछ की गई उनका बयान दर्ज किया गया। उनके बीच सुलह करवाने का प्रयास किया गया कि इस भवन को सर्व समाज के लिए दिया जाए। पर समुदाय विशेष के लोगों ने इस बात से इनकार कर दिया ।जबकि हिंदसेना व बजरंग दल के लोग इस बात पर सहमत हो गए थे कि अगर इस भवन को सर्व समाज के लिए दिया जाता है तो यहां पर प्रार्थना सभा भी की जा सकती है। जिस पर उन्हें आपत्ति नहीं होगी। पर ऐसा नहीं हो पाया अंततः मामला मामला और विवादित हो गया।

बजरंग दल के लोगों में आक्रोश

तो वही सुलह ना हो पाने की स्थिति में बजरंग दल के लोगों ने आक्रोश जताया व यह सवाल उठाया कि आखिर सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करके बनाए गए इस भवन पर कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही है। अगर निर्माण अवैध है तो इसे तोड़ा जाए। अगर प्रशासन इसे अवैध को वैध करार कर अनुमति देती है तो फिर इसे सर्व समाज के लिए दिया जाए। अगर ऐसा भी नहीं करते हैं तो फिर हम भी सरकारी जगहों पर मंदिर बनाकर वहां पर कब्जे करेंगे

इधर हिंद सेना भी अपनी मांग पर अड़ा हुआ है कि उक्त चर्च भवन को सर्व समाज भवन घोषित किया जाए। ताकि यह फैसला सभी समाज के हित में हो। हिंद सेना के प्रदेश मुख्य संयोजक तरुण नाथ योगी ने कहा कि हमने इस संबंध में 23 अगस्त को ही कलेक्टर के नाम से ज्ञापन देकर मांग किया था कि इसे सर्व समाज को सामुदायिक भवन के रूप में उपयोग उपभोग करने की अनुमति दी जाए।

कलिंगा विश्वविद्यालय रायपुर में टैलेंट शोकेस प्रतियोगिता आयोजित की गई

रायपुर। नैक द्वारा मान्यता प्राप्त कलिंगा विश्वविद्यालय भारत की एनआईआरएफ रैंकिंग 2021 में शीर्ष विश्वविद्यालय 150-200 के रैंक बैंड में शामिल है। कलिंगा विश्वविद्यालय उत्कृष्टता, नवीनतम शोध एवं छात्रों के व्यक्तित्व के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। वाणिज्य एवं प्रबधन संकाय ने हाल ही में ऑनलाइन प्रतिभा प्रदर्शन जैसेः- सोलो सिंगिंग, ग्रुप सिंगिंग, सोलो डांस, ग्रुप डांस, विज्ञापन बनाना, कविता, लघु कहानी, इंस्ट्रूमेंट बजाना, ड्रॉइंग, पेंटिंग, मेहंदी आदि विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य यह था कि छात्र एवं छात्राएं अपने शौक पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें तथा अपनी प्रतिभा के माध्यम से उन्नति के पथ पर निरंतर आगे बढ़े।

विश्वविद्यालय सभी छात्रों के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करता है जिसमें छात्र-छात्राओं को अपने हूनर एवं प्रतिभा को प्रदर्शित करने का समान मौका मिल सके। इस आयोजन में वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिये और इस प्रतियोगिता के माध्यम से अपने प्रतिभा को प्रदर्शित किये।

उद्घाटन सत्र में वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय के डीन डॉ. मोनिका सेठी शर्मा ने छात्रों के साथ भाग लिया। सहायक प्रोफेसर श्रीमती जी. दिव्या ने इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले विभिन्न समूहों को टैलेंट शोकेस प्रतियोगिता के घटकों के बारे में बताया।

कार्यक्रम की समन्वयक वाणिज्य और प्रबंधन संकाय के श्रीमती जी. दिव्या सहायक प्रोफेसर और श्रीमती प्रतीक्षा चीलमवार सहायक प्रोफेसर थी। समापन सत्र के दौरान परिणाम घोषित किया जिसमें प्रथम श्रेणी में बीबीए तृतीय सेमेस्टर का निशांत कश्यप द्वितीय श्रेणी में बीबीए प्रथम सेमेस्टर का वैभव परमार और तृतीय श्रेणी में बीबीए तृतीय सेमेस्टर की प्राची साहू विजेता रही।

हर नवरात्रि मां से मांगते हैं एक ही मन्नत, बच्ची की तबीयत ठीक हो जाए, तकलीफ देख खुद पर आ जाता है गुस्सा

नवप्रदेश संवाददाता

खरोरा। समीप्रस्त ग्राम मोहरेंगा के रहने वाले श्यामलाल गिलहरे जो पेशे से एक मजदूर है वहीं उनकी 17 वर्षीय बेटी बबिता को सबग्लोटिक स्टेनोसिस नामक बीमारी है, यह बीमारी उसे 13 वर्षों से है तब से ही उसके पिता ने हर मंदिर, हर नवरात्र में बस एक ही मन्नत मांगी की भगवान बस बेटी की तबियत ठीक हो जाये, और इसी उम्मीद में पिछले 10 वर्षों से वह उपवास रख बस यही मन्नत मांगते आये है।

वही मोहरेंगा की रहने वाली बबिता गिलहरे को 2008 से दुर्लभ सबग्लोटिक स्टेनोसिस बीमारी से पीड़ित है। गले की इस दुर्लभ बीमारी से पीड़ित मासूम गले के नीचे छेद कर नली की मदद से सांस ले पाती है। नाक और मुंह से वह सामान्य बच्चों की तरह सांस नहीं ले सकटी है। मासूम हर 10-15 दिन में बीमार हो जाती है मासूम को न तो नाक से सांस ले पाती है न ही उसे किसी प्रकार के सुंगध का पता चलता है वही उसे किसी प्रकार का खाना खाने पर स्वाद भी नही

आता उसके गले के निचे एक पाइप लगा हुआ है जिससे ही वह सांस ले पाती है । वही उस पाइप को भी हर महीने बदलना पड़ता है। वही जहाँ इस उम्र में बच्चें दिनभर खेलने के बाद भी नही थकते वही बबिता 10 मीनट भी कुछ काम कर ले तो उसकी सांस फूलने लगती है, जिसके कारण वह स्कूल भी नही जा पाती । वही जब बबिता बोलती है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो रोबोट की आवाज हो

इस बीमारी के इलाज में लाखो रुपए खर्च होंगे

मासूम का ईलाज का एक ही तरीका है वह है आपरेशन करना वही परिजनों के पास इतने पैसे नहीं हैं की वह आपरेशन करा सके। वही पिता ने मदद के लिए विधायको के चक्कर काटे लेकिन कुछ नही हुआ । बबिता के पिता ने मदद के लिए पूर्व विधायक देवजीभाई पटेल (उस समय के विधायक) व मौजूदा विधायक अनिता योगेंद्र शर्मा से कई बार मदद के लिए गुहार लगाई लेकिन उनदोनो विधायको की तरफ से सिर्फ उनको आश्वाशन मिला।

वही बिलासपुर के डॉ रौशन शर्मा ने बताया कि सबग्लोटिक स्टेनोसिस कई लोगो मे जन्म के तुरंत बाद होते हैं, और इसमें सांस लेने में कठिनाई होती है व आवाज भी बहुत कम आती है वही कई लोगो को इन बीमारी में स्वाद भी नही आता। वही सर्जरी के बाद लोग ठीक हो जाते है।

भाजपा नेताओं ने राशन दुकान के सामने धरना देकर किया प्रदर्शन

गुंडरदेही। गुंडरदेही मे सरकार द्वारा आवंटित चावल में प्रदेश सरकार की लूट के खिलाफशुक्रवार को भाजपा नेताओं ने शहर और ग्रामीण इलाके के राशन दुकान के सामने धरना देकर जमकर प्रदर्शन किया। दरअसल, कोरोना काल में प्रत्येक जरूरतमंद परिवार को केंद्र सरकार द्वारा पांच किलो अतिरिक्त मुफ्त चावल प्रदान किया गया था, भाजपा नेताओं का आरोप है कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने गरीबों के चावल पर डाका डालते हुए उसे नहीं बांटा। जिसको लेकर गुंडरदेही भाजपा मंडल एवं क्षेत्र के समस्त शक्ति केंद्रों द्वारा हितग्राहियों को 5 किलो चावल देने की मांग को लेकर राशन दुकान में जमकर प्रदर्शन किया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार भाजपा मंडल गुंडरदेही अध्यक्ष दुष्यंत कुमार सोनवानी ने कहा कि राशन दुकान में मोदी जी के द्वारा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत हर गरीब को फ्री 5 किलो चावल देने का फैसला किया है। इसी चावल की कालाबाजारी राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम प्रभारी सेवक महिपाल महामंत्री भाजपा मंडल गुंडरदेही व नगर पंचायत पूर्व अध्यक्ष कोमल सोनकर प्रभारी एवं सह प्रभारी सौरभ चोपड़ा के नेतृत्व में गुंडरदेही राशन दुकान में धरना देकर गरीब हितग्राहियों को उन्हें अपना हक लेने के लिए बताया गया।

भाजपा ने राशन दुकानों में एक दिवसीय धरना

खरोरा। प्राथमिक शाख सेवा समिति खरोरा व शासकीय राशन दुकान केशला में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त राशन 5 किग्रा चांवल प्रति व्यक्ति प्रति माह का वितरण कर एक दिवसीय धरना मंडल अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ठाकुर के नेतृत्व में किया गया।इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष ने कहाँ प्रदेश के कांग्रेस सरकार भूपेश मिठलाबरा द्वारा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत अनिमितता व घोटाला के संबंध में विभिन्न राशन दुकानों जा कर हितग्राहियों को बताया गया। प्रमुख रूप से पूर्व मंडल अध्यक्ष रोशन चंद्राकर, न.प.अध्यक्ष अनिल सोनी,मंडल प्रतिनिधि रामरतन देवांगन, महामंत्री द्वे घनश्याम चंद्राकर, दुलेश साहू,पूर्व जिलामहामंत्री किसान मोर्चा दुष्यंत साहू,युवामोर्चा अध्यक्ष आयुष वर्मा ,कार्यालय प्रभारी दीपक धनकर, पार्षदगण तोरण ठाकुर,कपिल नाशीने,पुरडेन्द्र पाध्यय,पंचराम यादव,पूर्व नगर अध्यक्ष विजय कन्नौजे, पूर्व पार्षद प्रेम लाल गिलहरे,बिसौहा देवांगन, गजानंद कुम्भकार,श्यामलाल साहू, शक्तिकेन्द्र प्रभारी लक्ष्मण देवांगन, मूलचन्द देवांगन, शंकर देवांगन, शिवलाल देवांगन, सोन कुमार कुर्रे सहित कार्यकर्तागण उपस्थित हुए।

गुरु छाया सेवा समिति की बैठक

खरोरा। गुरु छाया सेवा समिति के आवश्यक बैठक 9/10/2021 दिन शनिवार को अपराह्न 2 बजे गुरु छाया भवन-खरोरा में आहूत की गई है जिसमें वार्षिक आय व्यय का ब्यौरा एवं नए पदाधिकारियों का मनोनयन किया जाएगा। यह जानकारी समिति के सचिव एस. एस. बाँधे द्वारा दी गई।

तस्करों की नहीं आयी चालाकी काम, पकड़े गए

- **नशे के खिलाफचिल्फी पुलिस का कार्यवाही लगातार जारी**

नवप्रदेश संवाददाता

कवर्धा। पुलिस अधीक्षक कबीरधाम द्वारा जिला इकाई कबीरधाम के द्वारा क्राइम मीटिंग के माध्यम से समस्त थाना चौकी प्रभारियों को अपराध नियंत्रण हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में वरिष्ठ अधिकारियों से प्राप्त आदेशों की तामिली करते हुए उपनिरीक्षक थाना प्रभारी चिल्फी द्वारा अपने सूचना तंत्र को सक्रिय करते हुए जरिये मुखबीर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि रायपुर की तरफ से एक महेंद्रा बोलेरो मैक्सी ट्रक खाली आ रहे है में गांजा का परिवहन किया जा रहा । जिसपे चिल्फी पुलिस द्वारा तत्काल सूचना को वरिष्ठ

अधिकारियों को अवगत करवाते हुवे सूचना की तस्दीक हेतु टीम रवाना कर चलित नाकेबंदी के माध्यम से चेकिंग किया जाने लगा । मुखबिर के बताये हुलिया अनुसार महेंद्रा बुलोरो मैक्सी ट्रक क्रमांक OD02BL1366 को रुकवाकर घेराबंदी करते हुवे विधिसम्मत तलाशी ली गई । पिकप में एक व्यक्ति जो पिकप का चालक था अपना नाम अश्वनी कुमार दिगल पिता भावाग्रही दिगल उम्र 28 वर्ष साकिन तीलकपड़ाथाना खुजरिपाड़ा जिला कंधामाल व उसके साथी ने अपना नाम जतन दीगर पिता सदानंद दीगर उम्र 36 वर्ष साकिन सालागुड़ा थाना गोच्छापाडा जिला कंधामाल उड़ीसा का होना बताया व पीकअप कि विधिसम्मत डाले की तलाशी लेने पर लोहे के चादर को वेल्डिंग कराकर डाला के नीचे गोपनीय चेम्बर बनाकर ऊपर से चेम्बर नुमा चादर डाका हुआ को खोलकर चेक करने पर कुल 123 पैकेट गाजा जो खाखी रंग की टैप से लिपटा था । जिसे कॉल कराने पर गांजा का कुल वजन 128.060 किलोग्राम होना पाया गया। जप्त गांजा की कुल कीमत 25 लाख 61 हजार 200 रुपये व वाहन 05 लाख कुल व 02 नग मोबाइल कीमती 08 हजार रुपये जुमला 30 लाख 69 हजार 200 रुपये जप्त किया गया। आरोपी के विरूद्ध पर्याप्त सबूत साक्ष्य पाए जाने पर विधिवत कानूनी प्रकिया व कोविड नियमो का पालन करते हुवे गिरफ्तारी व जप्ती की कार्यवाही की गई । उक्त आरोपी को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया है।

आरोपी से पूछताछ करने पर गांजा का अवैध तस्करी करते हुए धन लाभ अर्जित करने महेंद्रा बुलोरो मैक्सी ट्रक के डाले के नीचे मोडिफाई कर गोपनीय चेम्बर बनाकर उड़ीसा से जबलपुर मध्यप्रदेश ले जाकर देश के विभिन्न स्थानों पे भेजना बताये ।

चितावर धाम भालुकोना में किया गया मनोकामना ज्योति प्रज्ववलित

खरोरा। अंचल के हिरमी, मोहरा,भालुकोना, भालेसुर, बरडीह, मुसवाडीह पथरचुवा सहित आसपास गांवो म नवरात्र को लेकर गुरुवार सुबह से ही मंदिरो एवं दुर्गा पंडालों को सजाने व साफ सफाई कर ज्योति प्रज्ज्वलित करने व

मूर्ति स्थापना को लेकर आवागमन बना रहा।जो विधि विधान के साथ सही मुहूर्त पर ही भालुकोना पर स्थापित चितावर धाम पर तेल 169 मनोकामना ज्योति कलशव 11 घी ज्योति प्रज्ज्वलित किया गया।इसके अलावा ग्राम रावन में शारदीय नवरात्रि के पावन पर्व पर ग्राम के सभी माता देवालयों में शुभ मुहूर्त पर ज्योति कलश प्रज्ज्वलित की गई। जय महामाया शक्ति पीठ में शारदीय नवरात्र में 37 ,शीतला मंदिर में 27,साथ ही चैत्र नवरात्र का मनोकामना ज्योति कलश महामाया मंदिर में 28, मां शीतला मंदिर में 16 दोनों पर्व का प्रज्ज्वलित हो रही हैं।

प्रदेश सरकार के चांवल घोटाला को लेकर भाजपा हुई तेज, राशन दुकानो के सामने दिया धरना

गरियाबंद। केन्द्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्य योजना के तहत गरीबो को लिए आबंटित चांवल में प्रदेश कांग्रेस सरकार द्वारा भ्रष्ट्राचार और घोटाला का आरोप लगाते हुए भाजपाईयो ने शुक्रवार को जिले राशन दुकान के सामने धरना प्रदर्शन किया। धरना प्रदर्शन के दौरान भाजपाईयो ने प्रधामंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत गरीब परिवार को मिलने वाले निशुल्क चांवल को लेकर कांग्रेस सरकार पर करोड़ो का घोटाला करने का आरोप लगाया। भाजपा नेताओ ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने गरीबो के हक में भी डाका डाल दिया। गरीबो की चिंता करते हुए मोदी सरकार ने प्रति गरीब परिवार प्रति सदस्य पांच किलो चांवल देने का

निर्णय लिया था। जो मई 2021 से नवंबर 2021 तक वितरण होना था। परंतु कांग्रेस सरकार ने इसमे भ्रष्ट्राचार और घोटाला कर दिया। जिससे प्रदेश के लाखो गरीब परिवार इससे वंचित हो गए।

इस अवसर पर जिला मुख्यालय स्थित शासकीय उचित मुल्य की दुकान के सामने धरना प्रदर्शन के दौरान जिला महामंत्री अनिल चंद्राकर ने कहा कि प्रदेश के दो करोड़ गरीब परिवार के लिए केन्द्र सरकार ने सात मीट्रिक टन चांवल का आबंटन किया था परंतु मात्र एक तिहाई लोगो की योजना का लाभ मिल सका। शेष चांवल को कांग्रेस सरकार हड़प गई। एक दो या तीन सदस्य वाले परिवार को तो चांवल मिला ही नही, यह बड़ा घोटाला है। गरियाबंद मंडल अध्यक्ष सुरेन्द्र सोनटेके ने कहा कि संकट के समय कांग्रेस सरकार ने प्रदेश के करीब 1.5 करोड़ गरीबो के मुंह से निवाला छीन लिया।

ई कामर्स कंपनियां कर रही व्यापारिक नियमों का खुला उल्लंघन : प्रकाश रोहरा

- **कार्यवाही को लेकर कैट ने सौंपा केन्द्र सरकार के नाम ज्ञापन**

नवप्रदेश संवाददाता

गरियाबंद। शुक्रवार को कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के सदस्य प्रकाश रोहरा के नेतृत्व में नगर के व्यापारियो ने केन्द्र सरकार द्वारा ई-कामर्स के लिए बनाए नियमो को तत्काल लागु करने की मांग को लेकर क्षेत्रीय सांसद और विधायक के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में केंद्र सरकार से ई-कॉमर्स नियमों का तत्काल प्रवर्तन हेतु मांग की गई। इस अवसर पर प्रकाश रोहरा ने बताया कि देश के ई-कामर्स व्यापार में बड़ी विदेशी

कम्पनियों द्वारा लगातार देश के क़ानूनों का खुला उल्लंघन किया जा रहा है। इससे चिल्हर एवं छोटे छोटे व्यापारियो को भारी नुकसान हो रहा है। केन्द्र सरकार से मांग की गई है ई-कॉमर्स नियमों का तत्काल लागु किया जाए। इस अवसर पर सांसद के नाम उनके प्रतिनिधि प्रहलाद सिंह ठाकुर एवं विधायक शुक्ल ने नाम एल्डमैन ओम राठौर को ज्ञापन सौंपा गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से वरिष्ठ व्यापारी ललित पारख, विनय दासवानी, हितेश ठक्कर, रोशन देवांगन, निखिल साहू, हरमेश चावड़ा आदि उपस्थित थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

झंडा विवाद के बाद से दो...

कोरबा, मुंगेली, बेमेतरा सहित अन्य जिले के बताए गए। एसपी से जब रिजवान के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि पूरा नाम थाने में दर्ज है, बहुत जल्द उपलब्ध करा दूंगा। एसपी ने दुर्गेश देवांगन की गिरफ्तारी से भी इनकार किया। प्रेस वार्ता के दौरान ही आईजी विवेकानंद सिन्हा भी पहुंचे। आईजी से जब पूछा गया कि किस दल ने घटना को अंजाम दिया तो उन्होंने कहा कि अभी यह जांच का विषय है कि किस दल के द्वारा ऐसी स्थिति निर्मित कराई गई है? इसके साथ ही आईजी ने एसपी को गिरफ्तार हुए लोगों के नाम मीडिया को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

बाहरी लोगों के प्रवेश पर रोक

कलेक्टर ने बताया कि जरूरी चीजों के लिए 7 से 10 बजे तक घर पहुंच सेवा की छूट पहले ही दी जा चुकी है। इसके साथ ही फूड की होम डिलीवरी शाम 5 बजे तक हो सकेगी। आम लोग भी सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक शहर के भीतर आवाजाही करते हुए अपना कामकाज कर सकेंगे। हालांकि इस दौरान शहर की सीमाएं पहले की तरह की सील रहेंगी। बाहर के लोग शहर में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। वहीं विभिन्न वार्डों में शांति व्यवस्था को लेकर चर्चा के लिए 9-9 लोगों की टीम जल्द तैयार कर ली जाएगी।

आशीष मिश्रा से...

कर रहा है. एक्टिविस्ट योगेंद्र यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि 12 अक्टूबर से उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में संयुक्त किसान मोर्चा कलश यात्रा निकालेगा. वहीं 18 अक्टूबर को रेल रोको आंदोलन और 26 अक्टूबर को लखनऊ में एक महापंचायत का कार्यक्रम भी होगा.

हंगरी और सर्बिया ने भी ...

भारत और हंगरी एक-दूसरे के कोविड -19 टीकाकरण प्रमाणपत्रों को मान्यता देने के लिए सहमत हैं। शिक्षा, व्यवसाय, पर्यटन और उससे आगे के लिए गतिशीलता की सुविधा प्रदान करेंगे।

भारत में ब्रिटिश उच्चायुक्त एलेक्स एलिस ने एक ट्वीट में कहा, यूके जाने वाले भारतीय यात्रियों के लिए 11 अक्टूबर से कोविशील्ड या यूके द्वारा अनुमोदित किसी अन्य वैक्सीन के जरिए पूरी तरह से टीका लगाए गए व्यक्ति को क्वारंटाइन में नहीं रहना होगा। इससे पहले भारत बायोटेक ने एक ट्वीट में कहा, हमने एक और मुकाम हासिल किया है, कोवैक्सीन को हंगरी में जीएमपी प्रमाणपत्र दिया गया। यह यूरोपीय नियामकों से भारत बायोटेक को मिला पहला ईयूड्रैगडीएमपी अनुपालन प्रमाणपत्र है। ट्विटर पर डाले गए एक नोट में कहा गया कि हंगरी के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफफर्मेसी एंड न्यूट्रिशन ने कोवैक्सीन के विनिर्माण के लिए जीएमपी प्रमाणपत्र दिया है। भारत बायोटेक ने कहा कि जीएमपी प्रमाण पत्र अब ईयूड्रैगडीएमपी डेटाबेस में सूचीबद्ध है, जो विनिर्माण प्राधिकरणों के यूरोपीय समुदाय के रिकॉर्ड और अच्छे विनिर्माण अभ्यास के प्रमाण पत्र का संग्रह है।

आखिरकार कांग्रेस...

भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय 24 अकबर रोड पर बुलाई गई है, ताकि मौजूदा राजनीतिक हालात, आगामी विधानसभा चुनावों और संगठनात्मक चुनावों पर चर्चा की जा सके।''

माना जा रहा है कि सीडब्ल्यूसी की इस बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव को लेकर किसी तारीख या रूपरेखा को अंतिम रूप दिया जा सकता है। कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि इस बैठक में उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में होने वाले विधानसभा चुनावों की तैयारियों को लेकर भी चर्चा होगी। इन राज्यों में अगले साल की शुरुआत में चुनाव होने हैं।

शाह से मिलकर बोले ...

है कि वो लोग(किसान) शांतिपूर्वक आंदोलन चलाएं, गृह मंत्री ने कहा है कि ये ही अपील रखनी चाहिए कि शांतिपूर्वक आंदोलन करें, हमें कोई आपत्ति नहीं है।'

हरियाणा के सीएम ने किसानों पर दिया बयान वापस लिया, माफी मांगी

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने पिछले दिनों किसानों के संबंध में दिए बयान को वापस लेते हुए किसानों से माफी मांग ली है। मुख्यमंत्री ने विपक्षी दलों से अपील की है कि वह इस मामले को तूल देकर राजनीतिक रोटियां सेकने का काम न करें। सीएम मनोहर लाल ने पिछले दिनों बीजेपी किसान मोर्चा की बैठक के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं को लट्ठ उठाने की सलाह दी थी। मुख्यमंत्री का एक विडियो वायरल हुआ था, जिसमें वह बोल रहे थे कि अब जैसे को तैसा वाला समय आ गया है। वह अगर लट्ठ उठाते हैं तो आप भी लट्ठ उठा लें। दो-चार महीने जेल रहेंगे तो नेता बनकर निकलेंगे।

किसान संगठनों ...

को दशहरे के दिन प्रधानामंत्री और गृह मंत्री का पुतला दहन किया जाएगा। 18 अक्टूबर को रेल रोको आंदोलन होगा। इसके बाद 26 अक्टूबर को लखनऊ में एक महापंचायत बुलाई गई है।

चलती ट्रेन में महिला के...

ट्रेन में चढ़े. उन्होंने पहले लूटपाट की और फिर एक महिला जो कि अपने पति के साथ यात्रा कर रही थी, उसके साथ गैंगरेप किया. इस मामले में 4 आरोपियों को पकड़ा गया है. 4 बदमाशों की तलाश की जा रही है. यह हादसा लखनऊ से मुंबई आ रही पुष्पक एक्सप्रेस में हुआ.

नगर सहित अंचल में नवरात्रि की धूम

भाटापारा/नवप्रदेश। नगर सहित समूचे ग्रामीण अंचल में गुरुवार से क्वार नवरात्रि का पर्व जोर शोर से प्रारंभ हो गया शुभ मुहूर्त पर पूजा अर्चना के साथ ही देवी मंदिरों में ज्योति कलश प्रज्वलित किए गए नवरात्रि के पहले दिन ही सभी देवी मंदिरों में सुबह से शाम तक भक्तों की अच्छी खासी भीड़ रही। नगर के माता दिवाला मंदिर में शीतला माता मंदिर में सिद्ध बाबा स्थित काली माई के मंदिर के अतिरिक्त तरेंगा के महामाया मंदिर में एवं मां मावली सिंगारपुर के मंदिर में ज्योति कलश की स्थापना की गई है इस बार काफी बड़ी संख्या में भक्तों ने ज्योत प्रज्वलित करवाई है गत वर्ष करो ना काल के चलते हैं मंदिरों में ज्योति कलश की स्थापना नहीं की गई थी ना ही दर्शन आदि के लिए भक्तों के लिए मंदिर भी नहीं खोले गए थे। इस वर्ष करो ना का संक्रमण कम होते ही सभी देवी मंदिरों में ज्योति कलशो की स्थापना की गई है तथा भक्तों के लिए मंदिरों में दर्शन की भी व्यवस्था की गई परंतु मंदिर प्रबंध कमेटियों के द्वारा स्पष्ट रूप से करो ना गाइडलाइन के पालन करने का निर्देश जारी किया गया है भक्तों से अनुरोध किया गया है कि वह लोग मास्क लगाकर ही माता के दर्शन कर सकेंगे। नगर में काफी बड़ी संख्या में दुर्गा प्रतिमा विराजित की गई है एक अनुमान के अनुसार लगभग 50 स्थानों पर दुर्गा प्रतिमा स्थापित की गई है। बड़े-बड़े पंडाल लगाए गए हैं और झालरों से विशेष सजावट भी की गई। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में दुर्गा विराजित की गई है।

मां मावली माता सिंगारपुर में 3914 मनोकामना ज्योति कलश की स्थापना की गई जिसमें से 3751 इस वर्ष के हैं जबकि 163 ज्योत आजीवन है। किसी प्रकार तरेंगा महामाया मंदिर में 965 मनोकामना ज्योति क्लश की स्थापना की गई

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर
जोन आयुक्त, कार्यालय जोन क्रमांक 8
मोहबा बाजार, रायपुर

//ईश्तहार/आधिपत्य हस्तांतरण की सूचना//

नामांतरण प्र.क्र. 262/2021-22
वार्ड का नाम - शहीद भगत सिंह वार्ड 21

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि शहीद भगत सिंह वार्ड 21 स्थित भवन/भूमि फार्चुन बिल्ड भूखंड 73 जो कि निगम अभिलेख में फार्चुन बिल्ड भागीदार संस्थान राजीव अग्रवाल आ. विमल कुमार के नाम से दर्ज है, जिसको श्रीमती निशी पूनम तिग्गा पति आश्रित मिंज ने लिखित द्वारा वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते है, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर दस्तावेजों के साथ प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/आपत्ति प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं की जावेगी, जिसके लिये यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

जोन आयुक्त
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर

नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं, मिलाप कुमार साहू आत्मज श्री भारत राम आयु 30 वर्ष निवासी ग्राम जनकपुर, पो. तेंदुनाला तहसील छुरिया, जिला - राजनांदगांव (छ.ग.) का हूँ। यह कि पूर्व में मेरा नाम मिलाप राम था जो मेरे समस्त शैक्षणिक प्रमाण पत्रों, दस्तावेजों/अभिलेखों में दर्ज है किन्तु मेरे कुछ अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम मिलाप राम साहू दर्ज है यह दोनों ही नाम अपूर्ण है। जिसे परिवर्तित कर मैं अपने वास्तविक पूर्ण नाम मिलाप कुमार साहू को सभी दस्तावेजों/अभिलेखों, प्रमाण पत्रों में दर्ज कराने के संबंध में शपथ पत्र प्रस्तुत कर दिया हूँ।

अतः अब से मुझे मिलाप कुमार साहू आ. श्री भारत राम के नाम से जाना, पहचाना, पुकारा व दर्ज किया जावे।

सो सूचना जाने

शपथकर्ता
मिलाप कुमार साहू
आत्मज श्री भारत राम

न्यायालय नजूल अधिकारी, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र./ई.पंजी./202011082200039/ अ 20(1), वर्ष 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मनोज कुमार देवांगन पिता स्व. दुकलहा देवांगन साकिन कवर्धा जिला कबीरधाम द्वारा नगर नजूल कवर्धा स्थित शीट क्र. 15डी, भू-खण्ड क्रमांक 135 कुल क्षेत्रफल 212.00 वर्गमीटर भू-खण्ड नजूल जांच रजिस्टर वर्ष 74-75 में धारक सालिकराम व दुकलहा आ. झाडूराम देवांगन साकिन कवर्धा के नाम पर दर्ज है।

आवेदक मनोज कुमार देवांगन पिता स्व. दुकलहा देवांगन साकिन कवर्धा जिला कबीरधाम द्वारा शीट क्र. 15डी भूखण्ड क्रमांक 135 क्षेत्रफल 212.00 वर्गमीटर भूखण्ड को दुकलहा आ. झाडूराम की मृत्यु दिनांक 04.04.2019 को एवं सालिकराम आ. झाडूराम की मृत्यु दिनांक 05.02.2015 को हो जाने के फलस्वरूप धारक के वैध वारिसानों के नाम पर निर्धारण किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है। अतः इस निर्धारण/नामांतरण के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को उजर अथवा आपत्ति हो वे इस न्यायालय में दिनांक 29.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से आपत्ति पेश कर सकते हैं। अतः आज दिनांक 5.10.2021 को इस न्यायालय के पद मुद्रा एवं हस्ताक्षर से जारी किया गया है।

जारी दिनांक : 05.10.21
पेशी दिनांक : 29.10.21

नजूल जांच अधिकारी
कबीरधाम

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला-दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

/अ-06/वर्ष : 2020-21

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मधुप यादव पिता राधेलाल यादव निवासी शंकर नगर दुर्ग तहसील दुर्ग जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 1228/6, 1227/9 कुल रकबा 0.0/00 हे. भूमि को विक्रेता लुकेश ताम्रकार पिता दयाराम ताम्रकार निवासी ग्राम तमेरपारा, दुर्ग से रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 20.09.21 को क्रय किया गया है। उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर क्रेता के पक्ष में प्रमाणीकरण किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रसुतत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 21.10.2021 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 05.10.2021 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

जारी दिनांक : 05.10.21
सुनवाई दिनांक : 21.10.21

तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

// कार्यालय सेनानी 4थी वाहिनी छसबल माना, रायपुर छ.ग. //

क्र.-4थी वाहिनी/छसबल/माना/सा.अ./एम/3018 /2021, दिनांक 07/10/2021

पुनः निविदा विज्ञप्ति

4थी वाहिनी छसबल, माना-रायपुर में नीचे दर्शाए अनुसार मरम्मत कार्य हेतु सेनानी 4थी वाहिनी की ओर से सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से 02 लिफाफा पद्धति में (लिफाफा 'अ' में टेक्निकल बीड एवं लिफाफा 'ब' में फायनेंसिलय बीड) मरम्मत कार्य बाबत् मोहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है। सीलबंद लिफाफे के ऊपर निविदा सूचना क्रमांक तथा निविदाकर्ता का पूरा नाम/पता लेख किया जाना आवश्यक है।

क्रं.	कार्य विवरण	राशि रु.	धरोहर राशि
1.	Renovation of Double Store Barrack "A" at 4th Battalion, Mana	12,88,437.00	39,000.00

निविदा प्रपत्र अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय से आवेदन पत्र (आयकर प्रमाण पत्र सहित) के साथ रू. 300/- कोषालय में लेखा शीर्ष 0055 पुलिस मिसलिनियस पुलिस रिसिप्ट के अंतर्गत सेनानी 4थी वाहिनी छसबल, माना रायपुर के नाम से जमा कर चालान की मूल प्रति सेनानी 4थी वाहिनी छसबल, माना को प्रस्तुत कर दिनांक 16.10.2021 के 17:00 बजे तक कार्यालयीन दिवस में निविदा फार्म प्राप्त किये जा सकते हैं।

निविदा बिक्री की अंतिम तिथि - 16.10.2021 को समय 17:00 बजे तक।
निविदा जमा करने की अंतिम तिथि - 21.10.2021 को समय 15:00 बजे तक।
निविदा खोलने की तिथि - 21.10.2021 को समय 16:00 बजे तक।

नोटः 1. उपरोक्तानुसारकार्य हेतु निविदा की नियम एवं शर्तें टेण्डर फार्म के साथ कार्यालयीन समय में कार्यालय सेनानी 4थी वाहिनी छसबल, माना से प्राप्त किए जा सकते हैं।
2.निविदा-पत्र डाक/कोरियर के माध्यम से स्वीकार नहीं होगी।
3. निविदा खोलने की तिथि में यदि अवकाश घोषित होती है, तो निविदा अगले कार्यालयीन दिवस में खोली जावेगी।

जी-64343/3

सेनानी
4थी वाहिनी छसबल
माना, रायपुर छ.ग.

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक यशवंत धोटे* द्वारा बंसल स्कूल कैम्पस, अशोक विहार कॉलोनी, पण्डरी से मुद्रित कर ब्रिस्टल चौक छोटापारा रायपुर से प्रकाशित, प्रबंध संपादक - चन्द्रशेखर धोटे
फोन व फैक्स : 0771-4035602, RNI NO.CHHHIN/2012/41806/ डाक पंजीयन क्रमांक सी.जी./आर.वाई.पी. डीएन/40/2019-2021

न्यूज गैलरी

अंतराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर स्कूलों में बाल मेला का होगा आयोजन

राजनांदगांव। सक्षम बिटिया अभियान कार्यक्रम अंतर्गत 11 अक्टूबर को अंतराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर पिरामल फाउंडेशन एवं स्कूल शिक्षा विभाग नोडल द्वारा विकासखंड के स्कूलों में बाल मेला का आयोजन किया जाएगा। बाल-मेला की गतिविधियों की फोटो व वीडियो को व्हाट्सएप्प के माध्यम से पिरामल फाउंडेशन के जिला समन्वयक निधि के मोबाईल नंबर पर भेजने के लिए सभी विकासखंड शिक्षा अधिकारी, सभी प्राचार्य एवं प्रधान पाठक को निर्देशित किया गया है।

आंबा केंद्रों में संगोष्ठी-लोक चौपाल का आयोजन

राजनांदगांव। सक्षम बिटिया अभियान कार्यक्रम अंतर्गत 5 से 11 अक्टूबर तक अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर पिरामल फाउंडेशन एवं जिला प्रशासन द्वारा सक्षम बिटिया अभियान के अंतर्गत समुदाय संगोष्ठी एवं लोक चौपाल का आयोजन किया जाएगा। जिले के सभी विकासखंड के आंगनबाड़ी केन्द्रों में समुदाय संगोष्ठि एवं लोक चौपाल का आयोजन किया जाएगा। 14 अक्टूबर तक संबंधित आगनबाड़ी केन्द्रों में समुदाय संगोष्ठी एवं लोक चौपाल का आयोजन सुनिश्चित कर समुदाय संगोष्ठी एवं लोक चौपाल की गतिविधियों के फोटो व वीडियो को व्हाट्सएप्प के माध्यम से पिरामल फाउंडेशन के जिला समन्वयक निधि के मोबाईल नंबर पर भेजने कहा गया है।

11 को मेगा क्रेडिट कैम्प का आयोजन

राजनांदगांव। जिला अग्रणी बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा राजनांदगांव द्वारा पद्मश्री गोविंदराम निर्मलकर ऑडिटोरियम गौरव पथ में 11 अक्टूबर को मेगा क्रेडिट कैम्प का आयोजन किया गया है। सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक चलेगा। लीड बैंक अधिकारी अजय त्रिपाठी ने बताया कि केन्द्र सरकार के वित्तीय सेवाएं विभाग के निर्देशानुसार जिला अग्रणी कार्यालय द्वारा 11 अक्टूबर को सुबह 11 बजे से ऑटिडोरियम में सभी शासकीय योजनाओं के अंतर्गत ऋण वितरण की जानकारी प्रदान करने के लिए व्यापक ऋण मेला आयोजित किया जाएगा। जिले में त्यौहारी सीजन के दौरान क्रेडिट के प्रवाह को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम), एनयूएलएम, मछली पालन, डेयरी उद्यम, किसान क्रेडिट कार्ड, मुद्रा योजना (शिशु, किशोर, तरूण) पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए सभी बैंक अधिकारियों द्वारा ऋण से संबंधित जानकारी दी जाएगी। इसके अलावा गृह ऋण, वाहन ऋण, प्रापर्टी लोन, मध्यम श्रेणी के उद्यम से संबंधित उद्यमियों को जानकारी दी जाएगी।

जम्मू कश्मीर में शिक्षकों की हत्या, बजरंग दल ने आतंकियों का जलाया पुतला

बालोद। जम्मू कश्मीर में पाकिस्तानी आतंकवादियों की कायराना हरकत एक बार फिर सामने आई है और उन्होंने एक बार फिर कश्मीर को लहू लुहान कर दिया व घाटी के निर्दोश कश्मीरी हिंदुओ की हत्या कर दी। इसके विरोध में बजरंग दल व विश्व हिंदू परिषद के सतीश विश्वकर्मा जिला संयोजक, उमेश सेन सहसंयोजक, सनी ढीमर सुरक्षा प्रमुख, तुषार ढीमर सहसुरक्षा प्रमुख, प्रमोद शारदा रोशन ढीमर नगर प्रमुख मिथिलेश साहू, चिंकू कौशिक, पुष्कर देशमुख, आशुतोष कौशिक, परितोष साहू, योगेश ठाकुर, रोशन सहित अन्य दर्जनों बजरंगी कार्यकर्ताओं ने शनिवार को शहर के जय स्तंभ चौक में आतंकवाद का पुतला दहन किया।

चावल घोटाले का आरोप, भाजपा का प्रदर्शन

साजा। कोरोना काल के दौरान गरीब परिवारों को तीन महीने 5 किलो निशुल्क चावल देने की घोषणा की गई थी। प्रदेश की कांग्रेस सरकार पर भाजपा ने ये चावल गरीबों में नहीं बांट कर बिचोलियों के साथ मिलकर खुला बाजार में बेच कर 15 सौ करोड़ रुपए के घोटाले का आरोप लगाकर पूरे छत्तीसगढ़ में प्रदेश भाजपा के आव्हान पर भारतीय जनता पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार व शनिवार को राशन दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन किया गया। इसी कड़ी में ग्राम बेलतारा विधानसभा साजा में भाजपाईयों ने धरना प्रदर्शन करते हुए भूपेश सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। भाजपा नेताओं ने कहा कि जब तक इस मामले में गरीबों को न्याय नहीं मिलता तब तक आंदोलन जारी रखने की बात कही। झुग्गी प्रकोष्ट के ज्वाला सिंह राजपूत के नेतृत्व में सैकड़ों ग्रामीण सहित भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया।

अनोखी परम्परा : माता का मंदिर महिलाओं के लिए अष्टमी के दिन ही खुलता है तो दूसरे मंदिर में कुत्ते की वफादारी की होती है पूजा

सुप्रीत शर्मा

बालोद/नवप्रदेश। आज चतुर्थी और पंचमी दोनों एक साथ है। शारदीय नवरात्रि में यह संयोग बना है। पंचमी पर भक्त मंदिरों में देवी प्रतिमा को श्रृंगार सामान भेंट करेंगे उन्हें चुनरी चढ़ाएंगे। इस पंचमी पर बालोद से राजनांदगांव मार्ग पर स्थित ग्राम दुधली (मालीघोरी) के दो अनूठे मंदिरों की कहानी पेश कर रहे हैं जो धार्मिक आस्था के केंद्र बिंदु के साथ-साथ कौतूहल का भी विषय है। इसमें एक देवी का मंदिर है तो दूसरा कुत्ते की वफादारी का मंदिर। नवरात्रि में दोनों ही जगह पर आस्था के जोत जल रहे हैं। उन मंदिरों की खासियत से यहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है। दुधली के मां दंतेश्वरी मंदिर जो हर साल दोनों नवरात्रि के अष्टमी पर महिलाओं के दर्शन के लिए खोला जाता है। बाकी समय सिर्फ साल में एक बार मेले के दिन इसे खोला जाता है जो कि प्रति वर्ष छेरछेरा पुन्नी के पहले आने वाले शनिवार को होता है। यानी यूं कहें कि महिलाओं के लिए साल में तीन अवसर पर ही यह मंदिर खोले जाते हैं। इसकी ख्याति आसपास के कई गांव में फैली हुई है। 12 गांव के बरगहिन के नाम

से जाने जाने वाली मां दंतेश्वरी मंदिर दुधली (मालीघोरी) में जोत कलश स्थापना की गई है। पहले पूर्वजों के द्वारा जुड़वारों के दिन 12 गांव की लोगों द्वारा हल्दी चावल तेल लेकर दंतेश्वरी प्रांगण में आते थे। 12 गांव के लोग दंतेश्वरी माता से बिना अनुमति के कोई काम नहीं करते थे। मंडई के समय पहले 12 गांव के डांग डोरी भी आते थे एवं सिर्फ मंडई एवं दोनों नवरात्रि के अष्टमी के ही दिन महिलाओं के लिए मां दंतेश्वरी मंदिर द्वार खोला जाता है। मान्यता अनुसार बाकी समय महिलाओं के लिए प्रवेश वर्जित रहता है एवं प्रत्येक सोमवार एवं गुरुवार को भी मंदिर का द्वार खुलता है लेकिन महिलाओं के लिए प्रवेश वर्जित रहता है। इसके पीछे असल कारण क्या है ये तो मालूम नहीं लेकिन वर्षों पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा को आज की पीढ़ी भी निभा रही। इसमें गांव की महिलाओं को भी आपत्ति नहीं है।

ये है मंदिर का इतिहास

इस मंदिर का निर्माण फणी नागवंशी शासकों द्वारा 14वीं-15वीं शताब्दी में कराया गया था। मंदिर के गर्भगृह में कुत्ते की प्रतिमा स्थापित है और उसके बगल में एक शिवलिंग भी है। कुकुरदेव मंदिर 200 मीटर के दायरे में फैला है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर भी दोनों ओर कुत्तों की प्रतिमा लगाई गई है। लोग शिव जी के साथ-साथ (कुकुरदेव) की वैसे ही पूजा करते हैं जैसे शिवमंदिरों में नंदी की पूजा होती है। यह मंदिर भैरव स्मारक है, जो भगवान शिव को समर्पित है। मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। मंदिर के शिखर के चारों ओर दीवार पर नागों का अंकन किया गया है। इ राम लक्ष्मण और शत्रुघ्न की प्रतिमा भी रखी गई है। मंदिर के प्रांगण में कुत्ते की प्रतिमा भी स्थापित है। इसके अलावा एक ही पत्थर से बनी दो फीट की गणेश प्रतिमा भी मंदिर में स्थापित है। जनश्रुति के अनुसार, कभी यहां बंजारों की बस्ती थी। मालीघोरी नाम के बंजारे के पास एक पालतू कुत्ता था। अकाल पड़ने के कारण बंजारे को अपने प्रिय कुत्ते को साहूकार के पास गिरवी रखना पड़ा। इसी बीच उसके घर चोरी हो गई। कुत्ते ने चोरों को साहूकार के घर से चोरी का माल समीप के तालाब में छुपाते देख लिया था। सुबह कुत्ता साहूकार को चोरी का सामान छुपाए स्थान पर ले गया और साहूकार को चोरी का सामान मिल गया। कुत्ते की वफादारी से अवगत होते ही उसने सारा विवरण एक कागज में लिखकर उसके गले में बांध दिया और असली मालिक के पास जाने के लिए उसे मुक्त कर दिया। अपने कुत्ते को साहूकार के घर से लौटकर आया देखकर बंजारे ने डंडे से पीट-पीटकर कुत्ते को मार डाला।

उसके मरने के बाद उसके गले में बंधे पत्र को देखकर उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और बंजारे ने अपने प्रिय स्वामी भक्त कुत्ते की याद में मंदिर प्रांगण में ही कुकुर समाधि बनवा दी। इस पाप से मुक्ति पाने के लिए बंजारे ने एक मंदिर की चाहरदीवारी के भीतर कुत्ते की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठित करवा दी। तभी से यह स्थान कुकुरदेव मंदिर के नाम से विख्यात हो गया। मंदिर के सामने की सड़क के पार से मालीघोरी गांव शुरू होता है जिसका नामकरण मालीघोरी बंजारा के नाम पर हुआ है। इस मंदिर में वैसे लोग भी आते हैं, जिन्हें कुत्ते ने काट लिया हो। यहां हालांकि किसी का इलाज तो नहीं होता, लेकिन ऐसा विश्वास है कि यहां आने से वह व्यक्ति ठीक हो जाता है। 'कुकुरदेव मंदिर' का बोर्ड देखकर कौतूहलवश भी लोग यहां आते हैं।

नवरात्रि पर्व में भीड़ के बीच खतरे से निपटने को प्रशासन ने कसी कमर

■ डोंगरगढ़ में नवरात्रि पर्व के दौरान विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश

राजनांदगांव। आस्था से जुड़े उत्सवी वातावरण के बीच असहज परिस्थितियां न बन पाए, इसलिए जनस्वास्थ्य को गंभीरता से लेते हुए प्रशासन ने सख्ती शुरू कर दी है। कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए जिले की धर्मनगरी डोंगरगढ़ में नवरात्रि पर्व के दौरान विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं, जिसमें कोविड-19 प्रोटोकाल का पालन किया जाना प्रमुखता से शामिल है।

छत्तीसगढ़ में आस्था के प्रमुख केंद्र धर्मनगरी डोंगरगढ़ की पहाड़ी पर स्थित मां बम्लेश्वरी मंदिर में माता की नियमित पूजा के साथ-साथ हर वर्ष मंर तथा चैत्र नवरात्रि पर्व में विशेष आराधना की जाती है। यहां 9 दिन के पर्व में छत्तीसगढ़ सहित पड़ोसी राज्यों से भी लाखों श्रद्धालु देवी दर्शन के लिए आते हैं। मंदिर में हजारों की संख्या में ज्योति प्रज्जवलित की जाती है तथा मेला भी लगाया जाता है। कोरोना संक्रमण के खतरे के कारण गुजरे तीन सत्र में यहां मेला नहीं लगाया गया था, लेकिन इस बार नवरात्रि पर्व के अवसर पर 7 अक्टूबर से मेला लगाने की तैयारी की जा रही है। मेला लगने से पहले प्रशासन के द्वारा कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु प्रत्येक क्रिया-कलापों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। बैठकों का दौर जारी है।

खतरे से निपटने की ऐसी है तैयारी

- सभी आवश्यक स्थानों पर मास्क व सैनेटाइजर की अनिवार्य व्यवस्था।
- पेयजल व खानपान व्यवस्था की होगी सतत निगरानी।
- प्रत्येक बेरिकेट पर कोविड जांच व वैक्सीनेशन की सुविधा रहेगी।
- पालीथीन का उपयोग प्रतिबंधितए लापरवाही मिली तो कार्रवाई होगी।

मेले की तैयारियों को लेकर डोंगरगढ़ एसडीएम अरुण कुमार वर्मा, एसडीओपी कुमार कृष्ण पटेल व थाना प्रभारी शिव चंद्रा ने स्थानीय लॉज मालिकों, होटल व्यवसायियों, छिरपानी स्थित प्रसाद दुकानदारों व ऑटोचालकों सहित मेले से संबंधित विभिन्न वर्ग के लोगों की बैठक ली है।

बैठक में उन्होंने मेले के दौरान कोरोना प्रोटोकाल का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही नवरात्रि पर्व को शांतिपूर्वक तथा प्रशासन के साथ समन्वय बनाकर मनाने की अपील की गई है। नवरात्रि मेला शुरू होने से पूर्व लॉज व होटल व्यसायियों को विशेष तौर पर निर्देशित किया गया है कि बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों को ठहराने से पूर्व उनके वैक्सीनेशन के डोज की जानकारी अनिवार्य रूप से लें, इसके पश्चात ही आगंतुकों को होटल में ठहरने के लिए प्रवेश दिया जाए।

मुसरा स्कूल में चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता का जिला स्तरीय आयोजन

राजनांदगांव/नवप्रदेश। शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला मुसरा में एक दिवसीय जिला स्तरीय चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन जवाहर बाल मंच के तत्वावधान में आयोजित किया गया। समस्त शिक्षको के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक सहभागिता दी।

इस जिला स्तरीय चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता में महात्मा गाँधी की जीवनी विषय पर पृथक-पृथक प्रतियोगिता हेतु पुरस्कार राशि निर्धारित की गयी थी। इस तारतम्य में 8 अक्टूबर को पुरस्कार वितरण समारोह जवाहर बाल मंच के प्रदेश संयोजक प्रणव दास वैष्णव, जिला अध्यक्ष खिलेंद्र वर्मा एवं संयोजक आदित्य वैष्णव एवं रामेश्वर साहू के मार्गदर्शन में निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दीनानाथ साहू (12वीं बायो) को स्मृति चिन्ह एवं 1100 रुपये, द्वितीय स्थान प्रियंका सेन (12वीं बायो) को स्मृति चिन्ह एवं 700 रुपये एवं तृतीय स्थान महेश कुमार सेन (9वीं) को स्मृति चिन्ह एवं 500 रुपये तथा चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जनेंद्र कुमार कंवर (12वीं बायो) को स्मृति चिन्ह एवं 1100 रुपये, द्वितीय स्थान फिरोज कुमार मरकाम (11वीं बायो) को स्मृति चिन्ह एवं 700 रुपये एवं तृतीय स्थान नंदनी वर्मा (12वीं बायो) को स्मृति चिन्ह एवं 500 रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की गयी।

कार्यकर्ता अपनी समस्याओं को निः संकोच रखें-सुशील शर्मा

भाटापारा। ब्लॉक कांग्रेस सिमगा दुवारा लगातार ग्रामीण क्षेत्रों में बूथ गठन करने आहूत बैठक में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने वाले प्रदेश कांग्रेस सचिव सुशील शर्मा ने सभी ग्रामीण जमीनी कार्यकर्ताओ की समस्याओं को पहले गंभीरता पूर्वक सुनकर संगठन के माध्यम से निराकरण करने की बात कही। ग्राम सितापार में मुख्य मार्ग से स्कूल होते चांदनी चौक तक सड़क निर्माण की मांग, स्कूल में अतिरिक्त कमरा निर्माण, ग्राम डोंगरिया में मुख्य मार्ग से दुर्गा मंच तक सड़क निर्माण और पुलिया निर्माण, गलियों में सी सी सड़क निर्माण की मांग, सामुदायिक भवन निर्माण, ग्राम झिरिया में दुर्गा मंदिर ज्योति कमरा का नव निर्माण सहित ग्राम मुसवाडीह में महामाया के पास नया टांसफार्मर लगाने, नवगांव, बछेरा में सी सी सड़क निर्माण सहित महामाया के पास सीमेंट कंक्रीटकरण की मांग ग्रामीणों ने रखी।

ग्रामों में 12 अक्टूबर तक कुष्ठ उन्मूलन पखवाड़ा का होगा आयोजन

राजनांदगांव। कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी पुराना जिला चिकित्सालय में राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम अन्तर्गत कुष्ठ उन्मूलन पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कुष्ठ मरीजों के प्रति सेवाभाव को याद कर भारत एवं छत्तीसगढ़ से कुष्ठ रोग से मुक्त करने का संकल्प अधिकारी, कर्मचारी, नर्सिंग के प्रशिक्षार्थी व जन समुदाय द्वारा लिया गया। इसके बाद कुष्ठ रोग के प्रति जागरूकता के लिए रैली निकालकर शहर भ्रमण किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मिथलेश चौधरी ने बताया कि 28 सितम्बर 2021 से 12 अक्टूबर 2021 तक कुष्ठ उन्मूलन पखवाड़ा विकासखंडों के ग्रामों में मनाया जा रहा है।

कवर्धा की घटना को लेकर भाजपा युवा मोर्चा ने किया विरोध प्रदर्शन

बेरला/बेमेतरा – कवर्धा मे हुए हिंदुओं के साथ हिंसक घटना मे शासन प्रशासन के द्वारा हिन्दुओं के ऊपर मुख्यमंत्री एवं मंत्री के दबाव में पुलिस द्वारा एकपक्षीय कार्रवाई पर उतारू हो गई हैं। निर्दोष जनता पर लाठियां बरसाया जा रहा है, आंसू गैस, गोले दागे जा रहे है, पूरा कवर्धा जल रहा है और छत्तीसगढ़ का शासन और प्रशासन मूकदर्शक बना बैठा हैं। वहीं अपना राजनैतिक चेहरा चमकाने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जलता कवर्धा छत्तीसगढ़ को छोड़ उत्तरप्रदेश में ढोंग करने चले गए हैं। जिसके खिलाफ भाजयुमो बेरला मंडल अध्यक्ष दीक्षांत साहु के नेतृत्व मे एकदिवसीय विरोध छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और कवर्धा विधायक मोहम्मद अकबर का पूतला दहन कर बेरला के तीनबत्ती चौक में विरोध जताया गया। हिन्दुओं के ऊपर इस प्रकार के अत्याचार और प्रशासनिक लाठीचार्ज पर भाजयुमो बेरला मंडल घोर निंदा करते हैं।प्रदर्शन करते समय भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष आशीष सोनी, नेताप्रतिपक्ष मानक चतुर्वेदी, जनपद सभापति हेमंत वैष्णव, जिला कार्यकारणी सदस्य युगल पाटिल, मंडल उपाध्यक्ष राजू जायसवाल, कुलदीप साहु, लेखराम साहु, मिडिया प्रभारी पुरूषोत्तम यादव, यशवंत साहु, पार्षद प्रतिनिधि जितेन्द्र जैन, बलराम यादव, कामदेव वर्मा, राघो सिन्हा, गौकरण साहु, प्रदीप धीवर आदि भाजयुमो कार्यकर्ता मौजूद रहें।

शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा विचार संगोष्ठी संपन्न

राजनांदगांव/नवप्रदेश। शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दी दिवस विचार संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए संस्था प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह बघेल ने कहा कि भाषा के माध्यम से हम अपने भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं, हिन्दी हमारी राजकाज की भाषा है, हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र हिन्दी जन आंदोलन की भाषा रही है।

हिन्दी के महत्व को गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने बहुत ही सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिन्दी महानदी, आज वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी विश्व स्तर पर प्रभाव शाली भाषा के रूप में उभरी है। प्राध्यापक कृष्ण कुमार दिवेद्वी विभागाध्यक्ष भूगोल ने कहा कि वर्तमान समय में हिन्दी विश्व बाजार में विज्ञान की भाषा बनकर विश्व में तीसरे क्रम में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोले जाने वाली लोक प्रिय भाषा है। हमारे देश में भी हिन्दी कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक बोली और आसानी से समझे जाने वाली भाषा का महत्व इसलिए भी अधिक है।

विदेश की आजादी की लड़ाई में वंदेमातरम् भारत माता की जय, स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, जैसे नारों की भाषा भी हिन्दी रही है। वर्तमान समय में आवश्यकता है कि हमारी युवा किशोर और वृद्ध पीढ़ी अपने दैनिक जीवन चर्चा में हिन्दी की ही शब्दों को अधिक से अधिक प्रयोग करें। हिन्दी में ही शुभकामना, बधाई संदेश के साथ-साथ आवेदन आमंत्रण आदि सभी हिन्दी का ही प्रयोग करेंगे, तो हिन्दी का सहज रूप से विस्तार और समृद्धी होगी।

महापौर ने उद्यान, सामुदायिक भवन सहित अनेकों निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया

राजनांदगांव/नवप्रदेश। नगर विकास की कडी में मोहड़ वार्ड नं. 49 स्थित शीतला मंदिर के पास राज्य प्रविर्तित योजनांतर्गत 21 लाख रूपये की लागत से उद्यान निर्माण, अधोसंरचना मद अंतर्गत 10 लाख रूपये की लागत से नाली व पीसीसी रोड निर्माण एवं महापौर निधि 5 लाख रूपये की लागत से शीतला मंदिर के पास सामुदायिक भवन निर्माण कार्य तथा बैगा पारा लखोली वार्ड नं. 33 में राज्य प्रविर्तित योजनांतर्गत 7.50 लाख रूपये की लागत से मुक्तिधाम उन्नयन कार्य व बैगा पारा हाई स्कूल में 11 लाख रूपये की लागत से खेल मैदान निर्माण कार्य कराये जाने महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देशमुख ने वार्डो में अलग-अलग आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में भूमिपूजन पूजा अर्चना कर श्रीफल फोड़ कर किया।

देवरबीजा सीता देवी मंदिर में भाजपा ने चलाया स्वच्छता अभियान

बेरला/बेमेतरा। सेवा और समपर्ण अभियान के अंतिम दिवस में भाजपा बेरला मंडल के ग्राम पंचायत देवरबीजा में सर्वप्रथम प्राचीन देवी सीता माता के मंदिर परिसर में स्वच्छ्ता अभियान व वृक्षारोपण किया गया। तत्पश्चात प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र देवरबीजा को रेडिएंट वार्मर मशीन, ऑक्सीजन कंस्ट्रेटर व उद्यान में लाइट व्यव्यथा के रूप में जनपद सदस्य केशर राजेश सोरी ने दिया सौगात। सभी मशीन का पूजा पाठ कर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति पूर्व विधायक अवधेश चंदेल व केशर सोरी ने फीता काटकर शुभारंभ किया। अंत में केशडबरी व बोतका के 41 हितग्राहियों को प्रधानमंत्री उज्ज्वाला योजना के अंतर्गत गैस सिलेंडर व चूल्हा वितरण किया गया। अवधेश चंदेल ने कहा सेवा और समपर्ण अभियान 17 सितम्बर प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस से प्रारंभ हुआ, वहाँ से लगातार हर एक मोर्चा प्रकोष्ट के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधिगण व कार्यकर्ता बंधु स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, जरूरत मंद व्यक्ति को मदद, योजना के लाभ के लिए हर एक व्यक्ति से संपर्क अनेक कार्यक्रम के माध्यम से सभा लगाकर कहीं भेट मुलाकात के माध्यम से जनता तक पहुँचने का काम किया। ऐसा सेवा भाव से कार्य करने वाली देश के एकलौती पार्टी वो है भारतीय जनता पार्टी है। चाहे सत्ता में रहे या न रहे पार्टी से जीतकर आये जनप्रतिनिधिगण चाहे वो सरपंच, जनपद, जिला या कोई कार्यकर्ता हो जनता की सेवा लगातार चलते रहता हैं।

गांजा परिवहन करने वाले आरोपियों को 15-15 वर्ष की कारावास

भाटापारा/नवप्रदेश। उड़ीसा से गाड़ी में गांजा लेकर आ रहे आरोपियों से 83 किलो गांजा जब्ती के मामले की सुनवाई के पश्चात न्यायालय ने इस मामले के 3 आरोपियों को 15 पंद्रह साल की सजा और डेढ़ डेढ़ लाख रुपये के जुर्माना से दंडित किया गया है। जुर्माना राशि अदा ना करने पर पृथक से 2 दो साल सजा भुगतना होगा। मामला बिलाईगढ़ थाना का है। तात्कालीन टीआई को मुखबिर ने सूचना दी कि कुछ आरोपी भारी मात्रा में गांजा लेकर आ रहे है। पुलिस ने 6 अगस्त 2018 को गिधौरी टुण्डरा के धनसाय पटेल व उसकी पत्नी संतरा बाई पटेल इक्को वाहन क्रमांक सीजी 04 रु 9841 में भारी मात्रा में गांजे का अवैध परिवहन करते हुए पकड़ा था। आरोपियों को गिधौरी बिलाईगढ के रास्ते आ रहे थे पुलिस ने दुम्हानी रोड पेट्रोल पंप के पास पकड़ा था। विवेचना के दौरान वाहन स्वामी जलवती पटेल की संलिप्तता पाए जाने से उसको भी आरोपी बनाया गया था। चालान न्यायालय में पेश किया गया था। प्रकरण का विचारण विशेष न्यायाधीश ऋषि बर्मन के समक्ष हुई जिसने प्रकरण के 12 अभियोजन साक्षियों को परीक्षण करते हुए आरोपीयों का पक्ष तथा उनके द्वारा पेश किये बचाव साक्षियों का पक्ष सुना। दोनों पक्षो की दलील सुनने के बाद न्यायालय ने यह फैसला सुनाया।

कलेक्टर ने जिले की सभी प्रमुख सड़कों को 15 नवंबर तक पेंच वर्क करने के दिए निर्देश

■ सभी एजेंसी निर्माण कार्यों में गति लाएं

■ निर्माण एजेंसियों की समीक्षा बैठक संपन्न

राजनांदगांव। कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में निर्माण एजेंसियों की समीक्षा बैठक ली। कलेक्टर श्री सिन्हा ने लोक निर्माण विभाग तथा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 15 नवम्बर तक सभी मुख्य सड़कों के पैच रिपेयरिंग तथा सड़क की मरम्मत करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही 31 दिसम्बर तक शेष सड़कों के मरम्मत का कार्य करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि सभी एजेंसी निर्माण कार्यों में गति लाएं। सड़कों के संधारण तथा स्थिति में सुधार के कार्य में तेजी लाएं। उन्होंने सभी कार्यपालन अभियंता से कहा कि सब इंजीनियर की बैठक लें तथा उन पर नियंत्रण रखें। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देते हुए कार्य करें और समय-समय ऑडिट करें। ऐसे कार्य जो लंबे समय से अप्रारंभ है उन्हें निरस्त कर दूसरे कार्य प्रारंभ करें। उन्होंने स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय के निर्माण कार्य को 31 दिसम्बर तक पूरा करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर श्री सिन्हा ने कहा कि लोक निर्माण विभाग तथा अन्य निर्माण एजेंसी भू-अर्जन से संबंधित रिकार्ड अवश्य अपडेट कराएं। भू-अर्जन के बाद संबंधितों को राशि देने के पश्चात राजस्व विभाग से समन्वय करते हुए खाता दुरूस्तीकरण का कार्य करवा लें। कलेक्टर ने कहा कि विधायक निधि से बन रहे अपूर्ण कार्यों को जल्दी पूरा कराएं। मुख्यमंत्री घोषणा पर अमल तथा डीएमएफ मद से किए जा रहे कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग में छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विसेस कॉपोरेशन लिमिटेड (सीजीएमएससी) किए जा रहे निर्माण कार्य तथा राजीव गांधी शिक्षा मिशन के तहत स्कूलों में किए जा रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा की।

न्याय सब्बो बर : सब्बो डहर

इंदिरा वन मितान योजना

कौशल विकास व आजीविका के लिए पहल

- 85 आदिवासी विकासखंडों में 10 हजार युवा समूहों का गठन
- 19 लाख परिवारों को लाभ

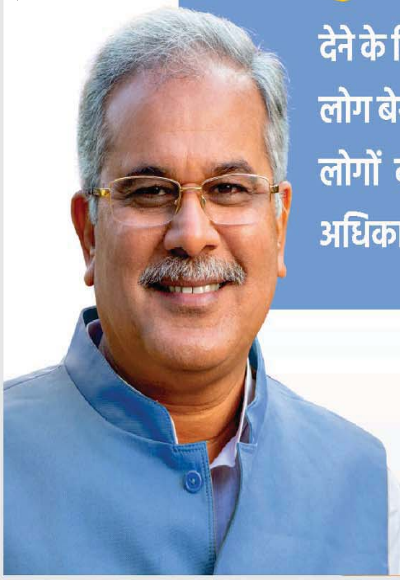

"अनुसूचित जनजाति परिवारों की आजीविका के साधनों को मजबूती देने के लिए हम लगातार प्रयास और नवाचार कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि जो लोग बेरोजगार हैं उन्हें रोजगार मिले और परंपरागत आजीविका अपनाने वाले लोगों की आमदनी में बढ़ोत्तरी हो। इस तरह आदिवासी समाज न्याय, अधिकार और शक्ति-संपन्न होगा।

– भूपेश बघेल मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ शासन | गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ | बात हे अभिमान के छत्तीसगढ़िया स्वाभिमान के

संवाद- 28976